



भारत का गज़ेल

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 406]
No. 406]

मई विलासी, शुक्रवार, अगस्त 29, 1986/भाद्र 7, 1908

NEW DELHI, FRIDAY, AUGUST 29, 1986/BHADRA 7, 1908

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या वी जाती हैं जिससे कि यह अलग संकलन के लिए भेजे रखा जा सके।

Separate Page is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

परिवहन संकाय

भागी, अर्थात् :—

(जल औत परिवहन विभाग)

अनुप्रयोगी

(पोत परिवहन पक्ष)

(विनियम 2 वेबिए)

मई विलासी, 29 अगस्त, 1986

समूद्र में दृश्यरों के निवारण के लिए अधिकारीय विनियम, 1972

अधिकृतवाता

भाग क—साधारण

विनियम—1

लापू होता

(क) ये विनियम उले समूद्र में तथा उसके पर्यावरण व्युत्पादी जल वाती के लिए तोगत्र तथा समुद्रों में जाने वाले सभी जल वाती को लापू होंगे।

(ख) इन विनियमों को कोई बात उचित प्राविहारिकों द्वारा पोतामयों, बन्धनाहीं जीलों या उले समुद्रों से संबंधित और समुद्रगामी जल वातों के लिए तोगत्र अवश्यकताये जल वातों के लिए बताए गए विशेष विनियमों के प्रबालन में कोई हस्तक्षेप नहीं करेगी। जहाँ तक ही सके ऐसे विशेष विनियम इन विनियमों के प्रत्युक्त होंगे।

सा. का. नि. 1053 (अ).—केन्द्रीय सरकार, वाणिज्य पोत परिवहन विनियम, 1958 (1958 का 44) को धारा 285 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए वाणिज्य पोत परिवहन (समूद्र में दृश्यरों का निवारण) विनियम, 1975 का और संशोधन करने के लिए निम्नलिखित विनियम अनाती है, अर्थात् :—

1. (1) इन विनियमों का संक्षिप्त नाम वाणिज्य पोत परिवहन (समूद्र में दृश्यरों का निवारण) संशोधन विनियम, 1986 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होते।

2. वाणिज्य पोत परिवहन (समूद्र में दृश्यरों का निवारण) विनियम, 1975 की विचारान अनुप्रयोगी के स्थान पर विशेष विनियम अनुप्रयोग रखो।

(ग) इन नियमों की कोई बात किसी राज्य सरकार द्वारा युक्त पीढ़ी और जलयात्र के अधीन खलने वाले जलयात्रों के लिए प्रतिरक्षित घटेशन या संकेत दीर्घी, शब्दों या सीढ़ी संकेतों के संबंध में या मस्तव जलयात्र ये के कप में मस्तव प्रहृण में सारे जलयात्रों के लिए प्रतिरक्षित घटेशन या संकेत दीर्घी या शब्दों के संबंध में बाताए गए विशेष नियमों में कोई भी हस्तक्षेप नहीं करेगी। ये प्रतिरक्षित घटेशन या संकेत दीर्घी या सीढ़ी संकेत जहाँ तक ही सके ऐसे होंगे कि उन्हें गलतों से इन नियमों के अधीन मस्तव प्राधिकृत कोई दीप, शब्द या संकेत न समझ लिया जाए।

(घ) संगठन द्वारा इन नियमों के प्रयोजन के लिए यातायात पूर्वकरण योग्यताओं की अंगीकृत किया जा सकेगा।

(ङ) जब कभी संबंधित सरकार यह विविध कर देंगे कि किसी विशेष नियम या प्रयोजन का कोई जलयात्र दीर्घी या शब्दों की संख्या, स्थिति, परामर्श या वृद्धयता की कमात, उसी प्रकार घटनि संकेतन उपकरणों के कार्य और जलयात्रों से संबंधित इन नियमों के किसी उपयोग का, जलयात्र के विशेष कार्य में हस्तक्षेप के बिना, पूर्णतः अनुपालन नहीं कर सकता तो ऐसा जलयात्र दीर्घी या शब्दों की संख्या, स्थिति परामर्श या वृद्धयता की कमात, उसी प्रकार घटनि संकेतक उपकरणों के कार्य और जलयात्रों की बाबत ऐसे अन्य उपकरणों का जिएँउपकरण ने उस जलयात्र की बाबत इन नियमों के प्रत्यधिक प्रत्यक्षप्रभावातिरिक्त किया हो, अनुपालन करेगा।

नियम 2

उत्तरदायिक

(क) इन नियमों की कोई बात किसी जलयात्र या उसके उपायों, मास्टव या कर्मचारियों को इन नियमों का अनुसालन करने से हुई किसी उपेक्षा या ऐसी कोई पूर्वविधानी वरतने से जो मानियों की साधारण पद्धति या मामूले की विशेष परिस्थिति हुआ अवैध हो उस उपेक्षा के परिणामों से बोनुक्त नहीं करेगी।

(ख) इन नियमों का धर्म सनातन और अनुपालन करने में नौपरिचहन और दृष्टियों से सभी जलयात्रों तथा ऐसी प्रथा विशेषताओं पर, जिनमें अन्तर्भूत जलयात्रों को परिसेमार्दी ही हैं, जिनमें तुरंत जलयात्रा दानने के लिए आवश्यक इन नियमों का विवरण ही सकता हो, उक्त धारा देना होगा।

नियम 3

सामान्य परिमाणाएँ

इन नियमों के प्रयोजन के लिए, सिवाय जहाँ संदर्भ से प्रथमा अवैधत है:-

(क) "जलयात्र" शब्द के प्रत्यार्थ प्रयोग वर्णन का समृद्धी जलयात्र जिसके प्रत्यार्थ अविवायपन जलयात्र और समृद्धी विमान जिसका समृद्ध में परिचहन के कप में प्रयोग किया जाता है, आता है।

(ख) "शाकित जलयात्र" शब्द से भवीनरी द्वारा भौक्ति कोई जलयात्र अवैधत है।

(ग) "पाल जलयात्र" शब्द से पाल के अधीन कोई जलयात्र अवैधत है, परन्तु यह तब जब तक कि नोडल मासीमरी यदि लगाई हो, का प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

(घ) "अस्त्रयन में लगे जलयात्र" से ऐसा कोई जलयात्र को भासियों, दोरियों, द्वालियों या अन्य मस्तव साधियों से, जो चालन

कमता को निर्बंधित करते हैं, मस्तवन करता है, अभियेत है किन्तु इसके अस्त्रयन द्वाली वाली भोरियों या अन्य मस्तवन साधियों से, जो चालन कमता में प्रतिबन्ध मार्ही करते हैं, से मस्तवन करने वाला जलयात्र नहीं आता है।

(ङ) "समृद्धी विमान" शब्द के प्रत्यार्थ कोई वायुयात्र जो समृद्ध पर चलने के लिए परिकल्पित हो जाता है।

(च) "अकमानाधीन जलयात्र" पद से ऐसा जलयात्र जो किसी आपवादिक परिस्थिति से इन नियमों द्वारा यातायातिक चालन करने में असमर्थ और इसलिए दूसरे जलयात्र के मार्ग से अपने जो दूर रखने में असमर्थ हो, अवैधत है।

(छ) "अपनी चालन में प्रतिबंधित जलयात्र" पद से वह जलयात्र जो अपने कार्य के कारण इन नियमों द्वारा यात्रा अवैधत चालन कमता में प्रतिबंधित हो और इसलिए दूसरे जलयात्र के मार्ग से अपने जो दूर रखने में असमर्थ हो, अवैधत है।

"अपनी चालन कमता में प्रतिबंधित जलयात्र" शब्द के अन्तर्गत निर्वालियत सम्मिलित होंगे किन्तु उन्होंने तक सीमित नहीं होंगे:

(१) नीकर्वंग विहृ, समृद्धी केवल या पाइपलाइन विकाने, लेकमा ज करने या उठाने के कार्य में लगा जलयात्र,

(२) रिकार्ड, सर्वेशन या अवकल संक्षिप्ताओं में लगा जलयात्र।

(३) संगृत में लगा या अविक्ताओं, अम्भ लाम्पारी या स्फोरा के स्थानांतरण में लगा मार्गस्थल जलयात्र।

(४) वायुयात्र के अवतरण या शोध कार्य में लगा जलयात्र।

(५) सुरेंग उठाने की संक्षिप्ताओं में लगा जलयात्र।

(६) नीकर्वंग और अपनी विशा बदलने की समर्थता में गंभीर कप से प्रतिबंधित जलयात्र जो नीकर्वंग कार्य में लगा हो।

(ज) "अपने बुधाव से निवड जलयात्र" शब्द से शक्ति चालिन जलयात्र जो उपलब्ध पानी की गहराई से संबंधित अपने बुधाव के कारण अपने अनुसारण मार्ग से विचलित होने की कमता में तोड़ता प्रतिबंधित हुआ जलयात्र अवैधत है।

(झ) "भारतस्थ" से जलयात्र जो लंगार पर या तट पर स्थिर प्रस्तुत नहीं है, अवैधत है।

(ञ) जलयात्र की "लम्बाई" और "बीड़ाइ" से उसकी अवकल्पना लम्बाई और अविक्ताम बीड़ाइ अवैधत है।

(ঠ) जब एक जलयात्र से दूसरा जलयात्र केवल भोवों से देखा जाए तब वोनों जलयात्र एक दूसरे के दृष्टि पथ में समझे जाएंगे।

(ঢ) "प्रतिबंधित वृद्धयता" से कोई भी स्थिति जिसमें कुहरा, मिस्ट, बफ़ तिरता, तृकाली वर्षा, बालूई तृपान या अन्य तात्सम कारणी द्वारा निर्वालियत वृद्धयता अवैधत है।

भाग अ-स्टोरिंग और (पाल) चालन नियम

भाग I—वृद्धयता की किसी भी स्थिति में जलयात्रों का अवहार

नियम 4

सामूहिक

इस भाग के नियम वृद्धयता की किसी भी स्थिति में लागू होंगे।

नियम 5

भवेशन

हुल जलयात्र सभी समय दृष्टि और अवंग हुआ उसी प्रकार प्रतिरक्षित परिस्थितियों तथा हालतों में सभी उपलब्ध यथोक्ति साधनों द्वारा उचित अवेक्षण चालू रखेगा ताकि परिस्थिति और उपकर के द्वारे का दूर दृष्टि किया जा सके।

नियम 6

सुरक्षित गति

हर जलयान सभी समय सुरक्षित गति से आगे बढ़ेगा ताकि वह उद्धकर निवारण के लिए उचित और प्रभावी कार्रवाई कर सके और विद्यमान परिवित्तियों तथा हालातों में योग्यता दूरी पर रह सके।

सुरक्षित गति का निर्धारण करने में अग्न बातों के साथ-साथ निम्न निवित बातों को ध्यान में रखा जाएगा।

(क) सभी जलयानों द्वारा :

- (1) दृश्यता की स्थिति;
 - (2) भ्रस्त्यन जलयानों या किसी अग्न बातों के संबोधनीकरणों से समाविहित यातायात धमता;
 - (3) विद्यमान स्थितियों में एको की दूरी तथा मुड़ो की धमता के विशेष संदर्भ में जलयान की ऐतरा बदलने की धमता;
 - (4) रात्रि में पारंभानीय प्रकाश की उपलिख्ति जैसे कि तटीय बस्तियों या उसको अपनी बस्तियों द्वारा पार्श्वभाग में फेला प्रकाश,
 - (5) वायु, समुद्र तथा प्रवाह की स्थिति और नीचालत जलरों का समीक्षण;
 - (6) दानों की उपलब्ध गहराई के संबंध में दृष्टान्त।
- (क) इसके अतिरिक्त, प्रवालनशील रडार स्थानित जलयानों द्वारा :
- (1) रडार उपकरण की विशेषताएँ, कार्यकान्वयन और परिस्थित;
 - (2) उपयोग में साथे रडार परास मापी द्वारा अधिरोपित कोई अवधारणा;
 - (3) समुद्री स्थिति, भौमम और अग्न बाधाकारक घट्टुओं के परिचालन का रडार पर प्रभाव;
 - (4) छोटे जलयान, बर्फ और अग्न प्लवदान बहुओं का रडार द्वारा योग्यता विवित परास पर परिवर्तन न होने की संभाव्यता;
 - (5) रडार द्वारा परिवर्तन किये गये जलयानों को संउत्तरांशान और हुल्कान।
 - (6) बुरपता का अधिक अचूक निर्धारण जो जब समोद्देश के जलयानों या अग्न बीजों की परास निवित करने के लिए रडार प्रयुक्त किया जाने से संभाव्य हो।

नियम 7

उद्धकर का जलरा

- (क) हर जलयान, उद्धकर का जलरा, यदि विद्यमान हो निवित करने के लिए विद्यमान परिवित्तियों तथा हालातों में योग्यता सभी उपलब्ध साधानों का उपयोग करेगा। यदि किसी प्रकार का संघर्ष हो सो ऐसा जलरा विद्यमान समझा जाएगा।
- (क) उद्धकर के जलरे की पूर्ण जेतावनी प्राप्त करने और परिवर्तन की गई बीजों का रडार अंकन या तरसम यथाक्रम निरीक्षण करने के लिए समाविहित रडार उपकरण का यदि लगाया गया हो और प्रबालनशील हो, जिसके प्रत्यर्पत्त लम्बी परास भी है उचित उपयोग किया जाएगा।
- (क) अपूरी सुविधा, विशेषताएँ अपूरी रडार सुविधा के साथ पर अनुबालन नहीं किए जाएंगे।

(घ) उद्धकर का जलरा यदि विद्यमान हो, निवित करने समय अग्न बातों के साथ-साथ निम्नलिखित बातों को भी ध्यान में रखा जाएगा :

- (1) ऐसा जलरा तब विद्यमान समझा जाएगा जब नजदीक ध्याने वाले जलयान का विद्युतक घारक उत्तेजय कर से न बरसे;
- (2) ऐसा जलरा विद्येयतया कमी-कमी उस समय भी विद्यमान रहता है जब नजदीक ध्याने वाले बृहत् जलयान या विद्युत या सामीक्षण के परास में नजदीक ध्याने वाले जलयान के घारक का उत्तेजय बदल दूर्य होता हो।

नियम 8

उद्धकर निवारणार्थ कार्रवाई

- (क) उद्धकर निवारणार्थ की गई कोई कार्रवाई, यदि घटना की परिवित्तियों माध्य कहे, पर्याप्त समय में और अवधि नीकोशल के अनुपालन की ओर उचित ध्यान देते हुए निवारणार्थ उचित की होगी।
- (ख) उद्धकर निवारणार्थ विश और/या गति का कोई परिवर्तन, यदि घटना को परिवित्तियों माध्य कहे, तो इतना जड़ा हो कि दृष्टि या रडार से निरोपण करने वाले अग्न जलयान को आसानी से बुरपता नहीं हो; इस ओरपा गति के छोड़े परिवर्तन का अधिकमण टाल दिया जाएगा।
- (ग) यदि समुद्री कला पर्याप्त हो, विशा का परिवर्तन ही किसी सजदीकी उद्धकर का जलरा टालने के लिए एकमेव गति प्रभावी कार्रवाई होगी परन्तु यह तब जब कि दृष्टि पर्याप्त समय में की गई हो, अभी भी ही और अग्न नजदीकी उद्धकर का जलरा उत्पन्न करने वाली न होगी।
- (घ) अग्न जलयान के साथ उद्धकर परिवर्तनार्थ की गई कार्रवाई ऐसा हो कि उसका परिवर्तन सुरक्षित दूरी पर पहुँचने में हो। कार्रवाई की धमता की जांच अग्न जलयान पूर्वतया निकल कर भागे छूल होने तक सावधानी से की जाएगी।
- (क) परि उद्धकर निवारणार्थ या दृष्टि निर्धारण के लिए अधिक समय देना आवश्यक हो तो जलयान अपर्याप्त गति दीजी करेगा या रोक लेगा या अपने निवेदन के साथानों की प्रतिवर्ती करके अपने को दूर रखेगा।

नियम 9

संकीर्ण जलमार्ग

- (क) जलयान संकीर्ण जलमार्ग या जलवाह के पास से वाले समय, अपने भी, जलमार्ग या जलवाह के आँख दीपा या उसके जलमान बाजू की तरफ जाती है, के पास जितना सुरक्षित और अवधार्य हो रखेगा।
- (ख) 20 मीटर से कम संकीर्ण जलमार्ग या जलवाह में सुरक्षित नीचावन करने वाले जलयान के मार्ग में अड़कन नहीं रखेगा।
- (ग) भ्रस्त्यन में लगा जलयान, संकीर्ण जलमार्ग या जलवाह में नीचरिक्षण करने वाले किसी अग्न जलयान के मार्ग में अड़कन नहीं रखेगा।

(ग) जलयान संस्कीर्त जलमार्ग या जलशाहु को पार न करें, यदि ऐसा पार करना केवल ऐसे जलमार्ग या जलशाहु में सुरक्षित नौकालन कर सके वाले जलयान के मार्ग में आधा डॉले। परवानुकूल जलयान, यदि पार करने वाले जलयान के उद्देश्य के संबंध में हो तो वह नियम 34(ग) से विहित व्यविधि संकेत का उपयोग कर सकेगा।

(क) (1) जब संस्कीर्त जलमार्ग या जलशाहु में हो केवल अभिलेखन किया होता है, तब यदि अभिलेखन होने वाले जलयान को अभिलेखी जलयान को मुक्तजाता से आगे बढ़ने को अनुमति होती की कार्रवाई करती हो, तो अधिनं वरे हुए जलयान ग्रन्त उद्देश्य नियम 34(ग)(1) से विहित योजित इवनि संकेत द्वारा सुधित करेगा।

अभिलेखन होने वाला जलयान यहि सूचना हो सके वह नियम 34(ग)(ii) में विहित योजित संकेत व्यविधि बरेगा और मुक्तजाता से आगे जाने की अनुमति देने के लिए अधिनं वरे हुए जलयान ग्रन्त उद्देश्य नियम 34(ग)(1) से विहित योजित इवनि संकेत द्वारा सुधित करेगा।

(2) यह नियम अभिलेखी जलयान को नियम 13 के अधीन उसके वायित्व से मुक्त नहीं करता है।

(ग) जलयान भोड़ या संस्कीर्त जलमार्ग या जलशाहु के लिए, जहाँ समय जलयान समर्थकी वाला से प्रस्तुत विकारी वे, के नज़रों वाले समय विशिष्ट सतर्कता और सावधानी से नौकालन करे और नियम 34(इ) से विहित योजित इवनि संकेत हो दें।

(छ) भोई जलयान, यदि घटना की परिस्थितियाँ मान्य करें, संकोर्त जलयान में लंगर जालना ठाल हो।

नियम 10

यातायात पृथक्करण योजनाएँ

(क) यह नियम संगठन द्वारा स्वीकृत यातायात पृथक्करण योजनाओं को काम् होगा।

(ग) यातायात पृथक्करण योजना का उपयोग करने वाला जलयान (1) योजित यातायात लेने में उस लेन के लिए नियित यातायात याहाव की सामान्य विधा में दृष्टि;

(2) जहाँ तक व्यवहार्य हो, यातायात पृथक्करण द्वेषा पा पृथक्करण क्षेत्र को खुला रखे;

(3) सामान्यतः यातायात लेन में लेन के अन्तिम स्थान से अंदर प्रवेश करे या बाहर निकल जाए, परन्तु बाजू से अंदर प्रवेश करने या बाहर निकलते समय यातायात याहाव की सामान्य विधा से खिलमा व्यवहार्य हो सके उसना लंगु कोण करके ऐसा करें।

(ग) जलयान जहाँ तक व्यवहार्य हो, यातायात लेनों को पार करना ठाल हो, परन्तु यदि ऐसा करना बाध्य हो तो यातायात बहाव को सामान्य विधा से यथासाम्य नौकाली से सम्बोध करके पार करें।

(ग) सीधी यातायात द्वारा जिसके नज़दीकी यातायात पृथक्करण योजना में योजित यातायात लेन का निर्भयता से उपयोग किया जा सकता है, तट के नज़दीक के यातायात लेनों का सामान्यतः उपयोग किया जाय। तथापि, 20 मीटर से कम लंबाई के जलयान और पाल जलयान सभी हालतों में तट के नज़दीक के यातायात लेनों का उपयोग कर सकें।

(ग) पार करने काले जलयान से आय जलयान या लेन में जारीकाला या लेन को छोड़नेवाला जलयान :

(1) लौकाल संकट निवारण के लिए यापाती भावसे ;

(2) पृथक्करण क्षेत्र में मास्पदाहण में लगने, के निवाप सामान्यतः पृथक्करण क्षेत्र में प्रवेश या पृथक्करण द्वेषा पार न करें।

(ग) यातायात पृथक्करण योजनाओं के अन्तिम स्थानों के निकटवर्ती क्षेत्रों में नौकालय करने वाला जलयान विशिष्ट सावधानी से नौकालन करें।

(ग) जलयान यथासाम्य यातायात पृथक्करण योजना या उसके अन्तिम स्थानों के निकटवर्ती क्षेत्रों में लंगर जालना ठाल हो।

(ग) जलयान जो यातायात पृथक्करण योजना का उपयोग नहीं करता उसे यथासाम्य विस्तृत अंतर एवंके परिवर्जित करे।

(ग) मास्पदाहण में लगा जलयान, यातायात लेन का प्रसुस्तरण करने वाले किसी जलयान के मार्ग में अवश्यन न डालें।

(ग) 20 मीटरों से कम लंबाई के जलयान या यातायात यातायात लेन का प्रसुस्तरण करने वाले शवित्रावित जलयान के सुरक्षित मार्ग में अवश्यन न डालें।

(द) पैतरा बदलने की अपनी समर्थता में प्रतिबंधित कोई जलयान जब यातायात पृथक्करण योजना लेन में समुद्री केवल विचारने, साफ करने या घटाने के कार्य में लगाया हो तो उसे उस कार्य के लिए यथा आवश्यक सीमा तक इस नियम के अनुपालन से सूख दी जाएगी।

(द) पैतरा बदलने की अपनी समर्थता में प्रतिबंधित कोई जलयान जब यातायात पृथक्करण योजना लेन में समुद्री केवल विचारने, साफ करने या घटाने के कार्य में लगाया हो तो उसे उस कार्य के लिए यथा आवश्यक सीमा तक इस नियम के अनुपालन से सूख दी जाएगी।

खण्ड II

एक दूसरे के दृष्टिव्य में जलयानों का अवश्यर

नियम 11

लागू होना

इस खण्ड के विनाएँ एक दूसरे के दृष्टिव्य में आगे वाले जलयानों को लागू होंगे।

नियम 12

वाल जलयान

(क) जब वो पाल जलयान एक दूसरे की ओर बढ़ते हैं, जिसमें दूबकर का जातरा रहता है, उसमें ले एक अपने को दूसरे के मार्ग से विनाप्रकार दूर रखें :

(i) जब हर जलयान विन बाजू पर पवन अनुभव रहता है, तब जलयान, जिसकी दाढ़ा बाजू पर पवन हो, अपने को दूसरे जलयान के मार्ग से दूर रखें ;

(ii) जब वोंगों एक ही बाजू पर पवन अनुभव रहते हैं, तब यातायातिनुबंध जलयान अपने को अनुवाली जलयान के मार्ग से दूर रखें ;

- (iii) अपने बाला बाजू पर पवन अनुमत करने वाला जलयान यदि पवन निमुख जलयान को देखे और निश्चितता से निर्धारण म कर सके कि उसकी छौते ली बाला या जलयान बाजू पर पवन है, स्वयं उस के मार्ग से दूर रहे।
- (iv) इन नियम के प्रयोगसार्थ, पवनाभिस्मृत बाजू पर तमसी जाएगी जो उस बाजू, जिस पर मूल्य पाल बहन किया जाता है, के विषद ही या फारेवाह बर्दी जलयान के मामले में, बड़ा आग पीछे का पाल बहन करने वाली बाजू के विषद की बाजू।

नियम-13

अभिलेखन

- (a) भाग (a), बाण I और II के नियमों में सावधिकृत सब कुछ के हीते हुए भी किसी अर्थ जलयान को लांघने वाला जलयान अपने की अभिलेखित जलयान के मार्ग से दूर रहें।
- (b) जलयान, जब दूसरे जलयान के साथ उसके घटन के पीछे से 22.5 अंशों से अधिक पीर विशा से आता है, अर्थात्, जिसे वह साथ रहा है, के संबंध में ऐसी स्थिति में ही कि रात्रि में वह अभिलेखित जलयान को केवल परिच्छन्न बलों देख सके परन्तु उसकी कोई भी बाल वित्ती न देख सके, अभिलेखी जलयान रामका जाएगा।
- (c) जलयान, जब दूसरे जलयान को लांघ रहा है कि नहीं, इस संशय में हो, तो सुनिश्चित करें कि लांघने को ही स्थिति है, और तबुकूल कार्य करें।
- (d) जो जलयानों की ओर धारक का कोई अनुबर्ती परिवहन अभिलेखी जलयान को, इन नियमों के अर्थ में पार करने वाला जलयान म बनाये या अभिलेखित जलयान पूर्णतया निकलकर भूत हीते तक उसके मार्ग को खुला रखने के कारण से उसे मब्दूत म करें।

नियम-14

सम्मुख स्थिति

- (a) जब को शक्ति-धारित जलयान पारस्परिक या जलयान पार है, यह विशा से मिलते हैं, जिसमें टक्कर का खतरा विद्यमान रहता है, तब हर एक जवान विशा जलयान बाजू परिवर्तन करेगा ताकि हर एक दूसरे को बाला बाजू से रिहर जाए।
- (b) ऐसी स्थिति, जब जलयान दूसरे जलयान को पारस्पराभिस्मृत या लगभग पारस्पराभिस्मृत देखते हैं और रात के समय वह दूसरे की मस्तूल बतियाएँ एक रेखा में या लगभग एक रेखा में और/या दोनों बगलबतियाएँ, देख सकता है तथा दिन के समय वह दूसरे जलयान के अनुरूपों पर देख सकता है, विद्यमान बनायी जाएगी।
- (c) जब जलयान को इस संबंध में कोई रंगत हो कि ऐसो कोई स्थिति विद्यमान है सो वह सुनिश्चित करें कि ऐसो स्थिति विद्यमान है और तबुकूल कार्यवाही करें।

नियम-15

पारक स्थिति

जब को शक्ति-धारित जलयान पार करते हैं, जिसमें टक्कर का खतरा समाया रहता है, जलयान, जिसके अपनी जलमना बाजू की ओर दूसरा जलयान होता है, अपने को दूसरे जलयान के मार्ग से दूर रखने और यदि उस समय, की परिस्थितियाएँ मात्र करें तो दूसरे जलयान की पार करना ढाल देंगे।

नियम-16

कार्यवाही करने वाला जलयान

हर जलयान जो इन विनियमों द्वारा अपने की दूसरे जलयान के मार्ग से दूर रखने के लिए निर्देशित है, वही तक संमत हो, मार्ग पूर्व बुला रखने की ओर और सारलान कार्यवाही करेगा।

नियम-17

मार्गधिकारी जलयान द्वारा कार्यवाही

- (i) जब वो जलयानों में से एक की मार्ग से दूर रहता होता है तब दूसरा अपनी विशा तथा गति जारी रखेगा।
- (ii) तथापि दूसरे जलयान को ऊपरी ही वह स्पष्ट दिखाई दे कि मार्ग से दूर रखने वाला जलयान इन नियमों के अनुपालन में उचित कार्यवाही नहीं कर रहा है, तो वह टक्कर निवारणीय सिर्फ अपनी युक्ति-धारित द्वारा कार्यवाही करेगा।
- (iii) अपनी विशा और गति जारी रखने वाला जलयान जब, किसी कारणवश, अपने की मार्ग से दूर रहते वाले जलयान के इतने निकट पाता है कि किम्बल उस जलयान को कार्यवाही से टक्कर दाली नहीं जा सकती, तो वह स्वयं ऐसो फारेवाही करेगा जो टक्कर दालने के लिए अत्यधिक सहाय्यमूल्य हो।
- (iv) शक्ति धारित जलयान जो पार करने की स्थिति में इस नियम के उपरीरा (क) (ii) के अनुसार दूसरे शक्ति धारित जलयान से टक्कर दालने के लिए कार्यवाही करता है, यदि उस समय की परिस्थिति मात्र करें अपने बाला बाजू की ओर के जलयान के लिए अपनी विशा परिवर्तन बाला बाजू न करें।
- (v) यह नियम मार्ग देने वाले जलयान को उसके मार्ग से दूर रखने के विविध से सूक्ष्म तरीकों करता।

नियम-18

जलयानों के एक दूसरे के संबंध में उत्तरवायित

- वही के विवाय जहाँ नियम 9, 10 और 13 से अन्यथा वरेक्षित है :
- (a) मार्गस्थ शक्ति-धारित जलयान :
- अकमानाधीन जलयान;
 - अपनी चालन-समता में प्रतिबंधित जलयान;
 - मस्त्यन में लगे जलयान;
 - पाल जलयान के मार्ग से दूर रहे।
- (b) मार्गस्थ पाल जलयान :
- अकमानाधीन जलयान;
 - अपनी चालन-समता में प्रतिबंधित जलयान;
 - मस्त्यन में लगे जलयान के मार्ग से दूर रहे।
- (c) मस्त्यन में लगा जलयान, जब मार्गस्थ होता है; वही तक हो सके,
- अकमानाधीन जलयान;
 - अपनी चालन-समता में प्रतिबंधित जलयान के मार्ग से दूर रहे।

- (d) (i) अकमानाधीन जलयान या अपनी चालन-समता में प्रति-धारित जलयान से अप्य कोई जलयान यदि तक्कालीन परिस्थितियाएँ मात्र होता है। नियम 28 के संकेत विशा कर अपने दूसरों से विश्व जलयान के सुरक्षित मार्ग में वह विश्व दासदा देंगे।

- (ii) अपने दूबाब से बिल्ड जलयान अपनी विशेष स्थिति को और पूरा ध्यान देकर विशिष्ट सावधानी से नीचालन करेगा।
- (iii) समुद्री विद्यान समृद्ध पर, सामान्यतः सभी जलयानों से पर्याप्त ऊँचाई पर रहे और उनके नीचालन में अड्डवन डानना डाल वें तथा प्रति ऐसी परिस्थिति में, जहाँ टक्कर का खतरा विद्यान हो, वह इस भाग के नियमों का अनुपालन करेगा।

खण्ड-III—प्रतिबंधित धूशयता में जलयानों का व्यवहार

नियम-19

प्रतिबंधित धूशयता में जलयानों का व्यवहार

- (क) यह नियम, जलयानों, जब प्रतिबंधित धूशयता में या उसके नीचों की सेव में नीचालन केवल में नीचालन करते समय एक एक दूसरे के वृक्षिण्य में नहीं होते, को साझा है।
- (ख) हर जलयान प्रतिबंधित धूशयता को विद्यान परिस्थितियों और हालातों के अनुकूलन में निर्मय गति से आगे बढ़े। शक्ति वानित जलयान अपने हंजन तुरन्त जालन के लिए तैयार रहें।
- (ग) हर जलयान, इस भाग के लिए 1 के नियमों का अनुपालन करते समय विद्यान परिस्थितियों और प्रतिबंधित धूशयता को हालातों को ओर उचित ध्यान दें।
- (घ) जलयान, जो दूसरे जलयान की उचितता को केवल रडार द्वारा पता लगाता है, मुखियत रहे यदि उसके की स्थिति विकसित हो रही है और/या टक्कर का खतरा विद्यान है। यदि हो, वह घेंट समय में परिवर्तन सामाविधित होता है, जहाँ तक हो सके, निम्नलिखित ढाल विद्या जाय :
- (i) अधिलंबित लिए जाने वाले जलयान से अग्र जीम के आगे के जलयान के लिए दाढ़ा बाजू की ओर विद्या परिवर्तन ;
- (ii) जीम के आगे या पोछे की ओर के जलयान की तरफ दिशा परिवर्तन ।
- (क) सिवाय जहाँ वह नियमित किया गया है कि टक्कर का खतरा विद्यान नहीं है, हर जलयान जो अपने जीम के आगे दूसरे जलयान का कोहरा संकेत स्पष्ट कर से सुनिश्चित है, या जो अपने जीम के आगे के जलयान के साथ खतरे की स्थिति दाल नहीं सकता, अपनी गति स्फूटतम करे जिससे वह अपने रास्ते पर चल सके। वह यदि आवश्यक हो दूसरे दूर रहे और किसी घटना में, टक्कर का भर दूर होने तक अवैत सावधानी से नीचालन करे।

सामना बतियाँ और तारों

नियम-20

बाजू होना

- (क) इस भाग के नियमों का वासन सभी जीमों के किया जाय।
- (ख) बतियों से संबंधित नियमों का अनुपालन सूर्योदात सक किया जाय, और ऐसे समय के बीच कोई अग्र बतिया, ऐसी बतियों को छोड़कर जो, गलती से इन नियमों में निर्दिष्ट बतियों में समाप्त किया जाये या उनकी धूशयता या विशिष्ट लम्हों की कोण या उचित अवेदान रखते में हस्तक्षेप न करे, वह विकाए।
- (ग) इन नियमों द्वारा विहित बतियों की यदि वहाँ की गई हो प्रतिबंधित धूशयता में सुर्योदात से सूर्योदात तक विद्यायी जाये

और अग्र सभी परिस्थितियों में जब आवश्यकता हो विद्यायी जाये।

- (घ) शक्तियों से संबंधित नियमों का अनुपालन दिन में किया जाये।
- (ङ) इन नियमों में निर्दिष्ट बतियों और शक्तियों इन विनियमों के अनुबंध 1 के उपरांतों का अनुपालन करें।

नियम 21

परिमाणात्

- (क) "मस्तूल बस्ती" से जलयान के आगे से पीछे तक की मध्य रेखा पर 225 अंशों के लैटिज कमान के ऊर अवधित प्रकाश विद्याने साली और इस प्रकार लगाई, सफेद बस्ती जो बीम के पीछे की ओर ठोक सामने 22.5 अंशों पर जलयान के दोनों तरफ प्रकाश में, अभियेत है।
- (ख) "धाराल बस्तिया" से अभियेत है जमना बाजू पर हरे बस्तों ओर डाढ़ा बाजू पर लाल बस्ती हर एक 112.5 अंशों के लैटिज कमान के ऊर अवधित प्रकाश विद्याने जानी और इस प्रकार लगाई जो बीम के पीछे ठीक सामने से 22.5 अंशों पर दोनों तरफ प्रकाश वे सके, 20 भीटरों से कम लगाई के जलयान में धगलाल बस्तिया, जलयान के आगे पीछे की मध्य रेखा पर बहुत किये गये एक लालटेन में संतुरत को जा सकती है।
- (ग) "पीछाल बस्ती" से अभियेत है पीछाल के वितनी व्यवहार्य हो नीचों पर 135 अंशों लैटिज कमान पर अवधित प्रकाश देने वाली, और इस प्रकार लगायी सहें बस्ती जो ठोक पीछे से जलयान के हर बाजू पर 67.5 अंशों तक प्रकाश विद्यायें।
- (घ) "जोकर्ण बस्ती", से अभियेत है पीली बस्ती जिसके लक्षण बहो होंगे जो इस नियम के परिवर्तेवाले (ग) में परिमाणित "पीछाल बस्ती" के हैं।
- (ङ) "पूर्ण बलयाकार बस्ती" से अभियेत है 360 अंशों के लैटिज कमान पर अवधित प्रकाश विद्याने वाली बस्ती।
- (च) "कोर्न बस्ती" से अभियेत है, बस्तों जो हर विवर 120 या उससे अधिक जावृतियों में विनियमित अव्याप्तर पर लैटिज होती हैं।

नियम 22

बतियों की धूशयता

इन नियमों में विविहृत बतियों की तोत्रता इन विनियमों के अनुबंध 1 के भाग 8 में विनियिष्ट के अनुसार होनी चाहिये ताकि निम्न स्फूटतम परातों पर धूशयान हो सके :

- (क) 50 भीटर या उच्चते अधिक लंबाई के जलयानों में :
- मस्तूल बस्ती, 6 भीट;
 - दगल बस्ती, 3 भीट;
 - पीछाल बस्ती, 3 भीट;
 - नीकर्ण बस्ती, 3 भीट;
 - सफेद, लाल, हरी या पीली गूर्ण बलयाकार बस्ती, 3 भीट।
- (ख) 12 भीटर या उच्चते अधिक परात् 60 भीटरों से कम लंबाई के जलयानों में
- मस्तूल बस्ती, 5 भीट; सिवाय कि जहाँ बलयान की लंबाई 20 भीटरों से कम हो, 3 भीट;

- भगल बसी, 2 मील;
- पीछल बसी, 2 मील;
- नीकर्ण बसी, 2 मील;
- सफेद, लाल, हरी या पीली पूर्ण बलयाकार बसी, 2 मील;

(ग) 12 मीटरों से कम लंबाई के जलयानों में:

- मस्तूल बसी, 2 मील;
- भगल बसी, 1 मील;
- पीछल बसी, 2 मील;
- नीकर्ण बसी, 2 मील;
- सफेद, लाल, हरी या पीली पूर्ण बलयाकार बसी, 2 मील।

(घ) अप्रकट, अंशतः जलयान जलयानों कीजी जाने वाली चीजों में

- सफेद पूर्ण बलयाकार बसी, 3 मील।

नियम 23

मार्गस्थ शक्ति-वासित जलयान

(क) मार्गस्थ शक्ति-वासित जलयान विवायेगा :

- (i) भगल मस्तूल बसी;
- (ii) अग्र मस्तूल बसी के पीछे और अगले से अधिक कंडाई पर फिलीय मस्तूल बसी; सिवाय कि 50 मीटरों से कम लंबाई का जलयान ऐसी अलियों विवाने को धार्य नहीं होगा परन्तु यदि वहाँ सो ऐसा करें;
- (iii) बगल अलियों;
- (iv) पीछल बसी;

(घ) वायु-कुशल जलयान अब अविस्यापन रीति से प्रकालन करता है, इस नियम के परिचये (क) में विहित अलियों के अतिरिक्त पूर्ण बलयाकार पीली कीदूर बसी विवायेगा।

(ग) (i) 12 मीटरों से कम लंबाई के शक्ति वासित जलयान इस नियम के परिचये (क) में विहित अलियों के बदले एक पूर्ण बलयाकार सफेद बसी तथा भगल अलियों विवायेगा।

(ii) 7 मीटरों से कम लंबाई के शक्ति वासित जलयान और जितकी अधिकतम गति 7 नांद से अधिक न हो, इस नियम के परिचये (क) में विहित अलियों के बदले पूर्ण बलयाकार सफेद बसी को विवायें। ऐसा जलयान, यदि अवश्यक हो, बगल अलियों भी विवायें।

(iii) 12 मीटरों से कम लंबाई से शक्ति वासित जलयान पर मस्तूल बसी या पूर्ण बलयाकार सफेद बसी आगली और विवायी मध्यरेखा से विस्थायित को जा सकेंगी, यदि मध्य रेखा पर फिलंग अवश्यक न हो, उसर्ते कि बगल अलियों एक लालटेन में समिक्षित हो जो जलयान की आगली और विवायी मध्य रेखा पर उसके बदले विवायेगा या जहाँ तक अवश्यक हो, उसी मध्य रेखा पर मस्तूल बसी या पूर्ण बलयाकार सफेद बसी की तरह स्थायित विवायेगा।

नियम—24

मौकर्ण फरता तथा छकेलना

(क) शक्तिवासित जलयान अब मौकर्ण करता है विवायें :

- (i) नियम 23 (क) (i) या (क) (ii) में विहित बसी के बदले एक उद्घागामी रेखा में हो अप्र मस्तूल

अलियों। जब दो की लंबाई मौकर्ण करने वाले जलयान के पीछल से दो के बीच से अंत तक 200 मीटरों से अधिक हो, एक उद्घागामी रेखा में ऐसी तीन अलियों।

- (ii) भगल अलियों;
- (iii) पीछल बसी;
- (iv) पीछल बसी के ऊपर एक उद्घागामी रेखा में मौकर्ण बसी;
- (v) जब मौकर्ण की लंबाई 200 मीटरों से अधिक हो, उत्तर्मुख समकोण जहाँ से वह अलियों तरह विवायी है।

(ख) जब घकेलने वाला जलयान और आगे घकेला जाने वाला जलयान एक संयुक्त एकक में बुझता से संयोजित होते हैं तब वे एक शक्ति वासित जलयान के कथ में माने जायेंगे और नियम 23 में विहित अलियों विवायें।

(ग) शक्ति वासित जलयान जब आगे घकेलता है या बाजू की ओर से मौकर्ण करता है, सिवाय संयुक्त एकक के मामले में, विवायें :

- (i) नियम 23(क)(i) या (क)(ii) में विहित बसी के बदले एक उद्घागामी रेखा में हो अप्र मस्तूल अलियों;

- (ii) भगल अलियों;

- (iii) पीछल बसी;

(घ) शक्ति वासित जलयान जिसे इस नियम के परिचये (क) और (ग) लागू होते हैं नियम 23(क) (II) का भी मनुषालन करे।

(ए) इस नियम के परिचये (ए) में उल्लिखित अहमजों से विहित मौकर्ण किया जाने वाला जलयान या बस्तु विवायाः :

- (i) भगल अलियों;

- (ii) पीछल बसी;

- (iii) जब दो की लंबाई 200 मीटरों से अधिक हो, उत्तर्मुख समकोण जहाँ से वह स्पष्ट विवायी है।

(फ) परस्तु यह तब जब कि जलयानों की किसी भी संवया एक सतह में भीकर्णत या घकेल भी जाती है, एक जलयान के कथ में अलियों विवायें।

- (1) आगे घकेला जाने वाला जलयान यो संयुक्त एकक का आग न हो, अगले भाग में, बगल अलियों विवायें;

- (2) बाजू से भीकर्णत होने वाला जलयान, पीछल बसी और अगले भाग में, बगल अलियों विवायेगा।

(घ) अप्रकट, अंशतः जलयान जलयान या बस्तु या नौकर्ण विवायें जाने वाली ऐसे जलयानों या बस्तुओं का समुच्चय विवायाः।

- (1) यदि वह औडार्ड में 25 मीटर से कम हो, तो एक पूर्ण बलयाकार सफेद बसी अप्र सिरे पर या उसके नजदीक और एक पश्च तिर पर या उसके नजदीक सिवाय उसके कोई बसी अप्र पर या उसके नजदीक विवायें को आवश्यकता नहीं;

- (2) यदि वह औडार्ड में 25 मीटर या अधिक हो, तो उसके औडार्ड के सिरों पर या उसके नजदीक यो अतिरिक्त पूर्ण बलयाकार सफेद अलियों;

- (3) यदि वह संशोधने में 100 मीटर से अधिक हो तो उप पैरा (1) और (2) में विहित बलियों के बीच अतिरिक्त पूर्ण बलयाकार सकेव बलियों इस प्रकार कि इन बलियों के बीच की दूरी 100 मीटर से अधिक नहीं होगी ;
- (4) नीकर्षित किए जाने वाले अंतिम जलयान या बस्तु के ऊपर डोल के सिरे पर या उसके नजदीक हीराकार और यदि नीकर्षण की दूरी 200 मीटर से अधिक हो तो एक अतिरिक्त हीराकार जहाँ वह अच्छी तरह से विद्युत दें और जहाँ तक उच्चवहार्य हो आगे लगाया जाएगा ।
- (अ) जहाँ किसी पर्याप्त कारण से नीकर्षित किये जाने वाले जलयान या बस्तु के लिए इस नियम के पैरा (ङ) या (छ) में विहित बलियों या आकार विकास उच्चवहार्य हो, वहाँ नीकर्षित किये गये जलयान या बस्तु को प्रकाशित करने या कम से कम ऐसे जलयान या बस्तु की उपस्थिति सुचित करने के लिए सभी संभाव्य साधनों का उपयोग किया जाएगा ।
- (ब) जहाँ किसी पर्याप्त कारण से किसी ऐसे जलयान के लिए जो सामान्यतया नीकर्षण कार्य में नहीं लगा हुआ है, इस नियम के पैरा (क) या (ख) में विहित बलियों विकास अवधारणार्य हो वहाँ ऐसे जलयान से, जब वह संकठ में फंसे अथवा जलयान के नीकर्षण में लगा हो, या जिसे अव्यया भवद को आवश्यकता हो उन बलियों का विकास अवेक्षित नहीं होगा । नियम 36 द्वारा प्राविहित विशेष नीकर्षण रेखा की प्रदीवन करके नीकर्षण जलयान और नीकर्षित किये जाने वाले जलयान के बीच संबंध के स्वरूप को उपर्याप्त करने के लिए सभी संभव उपाय किए जाएंगे ।

नियम 25

पाल से चलने वाले मार्गस्थ तथा बस्तु से चलने वाले जलयान

- (क) पाल से चलने वाला मार्गस्थ जलयान :
- (1) बगलबलियों ;
 - (2) एक पीछल बसी विकायेगा ;
- (ख) 22 मीटर से कम लंबाई के पाल जलयान में इस नियम के पैरा (क) में विहित बलियों, मस्तूल पर या मस्तूल के नजदीक लगाये जाने वाले एक लालटेन में सम्मिलित की जा सकती हैं, जहाँ से वह अच्छी तरह से विद्युत हो ।
- (ग) पाल से चलने वाले मार्गस्थ जलयान, इस नियम के पैरा (क) में विहित बलियों के अतिरिक्त, जो पूर्ण बलयाकार मस्तूल पर या उसके नजदीक जहाँ से वह अच्छी तरह विद्युत हो, एक उच्च गामी रेखा में, जिसमें ऊपर की लाल और नीचे की हीरों हो, विकायेगा परन्तु यह बलियों इस नियम के पैरा (ख) में अनुबोधित संपुष्ट लालटेन के सहयोग में नहीं होना चाहिए ।
- (घ) (1) 7 मीटर से कम लंबाई का पाल जलयान, यदि उच्चवहार्य हो तो इस नियम के पैरा (क) या (ख) में विहित बलियों विकायेगा किन्तु यदि वह नहीं विद्युत हो तो जलयान पर एक पूर्णतः नीतार विद्युत दार्य या सकेव प्रकाश विकास वाला दोष लालटेन होना चाहिए जो उक्कर निवारणार्थ पर्याप्त समय में विद्युत जाएगा ।

- (2) बस्तु से चलने वाला जलयान, इस नियम में पाल जलयान के लिए विहित बलियों विकायेगा, परन्तु यदि वह नहीं विद्युत हो तो जलयान पर एक पूर्णतः नीतार विद्युत दार्य या सकेव प्रकाश विकास वाला दोष लालटेन होना चाहिए जो उक्कर निवारणार्थ पर्याप्त समय में विद्युत जाएगा ।
- (3) पाल से चलने वाला जलयान जब भरोनरी से भी नोटिस होता है तब उप भाग में जहाँ से वह स्पष्ट विद्युत हो, भरोनरी शक्ति जिसका शीर्ष नीचे हो विद्युत जाएगा ।

नियम 26

मस्तूल जलयान

- (क) मस्तूल में लगा जलयान, मार्गस्थ हो या लंगरावस्था में हो, केवल वही बलियों और शक्ति विकायेगा जो इस नियम में विहित हैं ।
- (ख) जलयान जब द्राईलिंग में लगा हुआ हो अर्थात् मस्तूल में प्रयुक्त नीकर्षण जाल या भग्य उपस्कर, जो मस्तूल उपस्कर के कम में प्रयुक्त होते हैं, को पानी में छोड़देने में लगा हो, विद्युतेगा :
- (1) एक उच्चेगामी रेखा में जो पूर्ण बलयाकार बलियों जिनमें ऊपर की हीरों और नीचे की सकेव हो, या एक दोषी शक्ति जिसमें दो शंकु जिनके शीर्ष एकत्रित एक उच्चेगामी रेखों में, एक के ऊपर दूसरा इस स्थिति में हों, समिनित हैं; 20 मीटर से कम लंबाई के जलयान में, इस शक्ति के बदले दोकरी की शक्ति विद्युत सकते हैं;
 - (2) मस्तूल वही पूर्ण बलयाकार हीरी बलों के पीछे तथा उससे कंचाई पर हों; 50 मीटर से कम लंबाई के जलयान को ऐसी बलों विकास जालयान अव्ययकर नहीं है किन्तु वह जहाँ तो विद्युत सकता है;
 - (3) पानी में चलने समय इस पैरा में विहित बलियों के अतिरिक्त जाल बलियों और पीछल बलों ।
- (ग) द्राईलिंग के अतिरिक्त मस्तूल में लगा जलयान निम्नशिवित विकायेगा :
- (1) एक उच्चेगामी रेखा में, जो पूर्ण बलयाकार बलियों जिनमें ऊपर की लाल और नीचे की सकेव हो, या एक दोषी शक्ति जिसमें दो शंकु जिनके शीर्ष एकत्रित एक उच्चेगामी रेखों में, एक के ऊपर दूसरा इस स्थिति में हों, समिनित हैं; 20 मीटर से कम लंबाई या जलयान इस शक्ति के बदले दोकरी की शक्ति विद्युत सकता है;
 - (2) जब द्रूरुच नीतार जलयान से समान्तर 150 मीटर से अधिक लंबाई का हो, तब पूर्ण बलयाकार सकेव बली या शंकु शक्ति जिसका शीर्ष उच्चेगामी और गीयर की विद्युत में हो;
 - (3) पानी में चलने समय, इस पैरा में विहित बलियों के अतिरिक्त जाल बलियों और पीछल बलों ।
- (घ) अस्य जलयानों के नजदीकी सार्वीय में मस्तूल में लगा जलयान इन विनियमों के अनुबंध II में विहित अतिरिक्त उत्तेत विद्युत सकेगा ।
- (ङ) अब जलयान मस्तूल में नहीं लगा हो तब वह इस नियम में विहित बलियों या शक्ति नहीं विकायेगा किन्तु केवल वे बलियों विकायेगा जो उसकी लंबाई के जलयान के लिए विहित हैं ।

नियम 27

अक्षमानाधीन या जलान समता में नियंत्रित जलयान

(क) अक्षमानाधीन जलयान नियन्त्रित विकाएगा :

- (1) एक उद्दर्श्यामी रेखा में, जो पूर्ण बलयाकार लाल बत्तियों जहाँ से ऐ स्पष्ट विस्तारी हो सकें;
- (2) एक उद्दर्श्यामी रेखा में, जो गोले या तरसन शब्द से ऐ स्पष्ट विकायों हो सकें;
- (3) पानी में जलते समय, इस पैरा में विहित बत्तियों के अतिरिक्त बगल बत्तियों और पीछल बत्ती।

(ख) यह जलयान जिसकी समता सुरंग उठाने तक प्रतिवंशित है ऐसे जलयान को छोड़कर जो सुरंग तोकने के कार्य में लगा है, नियन्त्रित विकाएगा :

- (1) एक उद्दर्श्यामी रेखा में, जो पूर्ण बलयाकार बत्तियों जहाँ से ऐ स्पष्ट विकायी हैं। इन बत्तियों में उच्चतम और नियन्त्रित बत्तियों लाल तथा मध्य की बत्ती सकें होंगी;
- (2) एक उद्दर्श्यामी रेखा में, जीन शब्द से जहाँ से ऐ स्पष्ट विकायी हो सकें। इन शब्दों में उच्चतम और नियन्त्रित बत्तियों लाल तथा मध्य की बत्ती सकें होंगी;
- (3) पानी में जलते समय, उप पैरा (1) में विहित बत्तियों के अतिरिक्त मस्तूल बत्ती या बत्तियों, बगल बिक्षयों और पीछल बत्ती;
- (4) लंगर पर होते समय, उप पैरा (1) और (2) में विहित बत्तियों या शब्दों के अतिरिक्त नियम 30 में विहित बत्ती, बत्तियों या शब्दों के अतिरिक्त उच्चतम समकोण होंगी;

(ग) ऐसा जलयान जो ऐसे नीकर्ण कार्य में लगा है जिससे नीकर्णित किये जाने वाले जलयान की ओर अपनी विकाया से विकलन करने की समर्थना तोत्र प्रतिवंशित हो जाती है, नियम 24 (क) में विहित बत्तियों या शब्दों के अतिरिक्त इस नियम के उप पैरा व (1) और (2) में विहित बत्तियों और शब्दों विकाएगा।

(घ) निकर्ण या अवजल कार्यालयी में लगा जलयान जब पालन शर्कित में प्रतिवंशित होता है, इस नियम के पैरा (घ) (1), (2) और (3) में विहित बत्तियों और शब्दों विकाया और जब रास्ते में घाया हो तो इनके अतिरिक्त विकाया :

- (1) एक उद्दर्श्यामी रेखा में वो पूर्ण बलयाकार लाल बत्तियों या जो गोल यह विकाने के लिए कि किस दशा में घाया है;
- (2) एक उद्दर्श्यामी रेखा में जो पूर्ण बलयाकार हरी बत्तियों या दो चतुर्मुख समकोण यह विकाने के लिए कि कीन-सी विकाया में अन्य जलयान जा सकता है;
- (3) जलयान लंगर पर होता है, तब नियम 30 में विहित बत्तियों या शब्दों के बदले इस पैरा में विहित बत्तियों या शब्दों विकाये।

(इ) जब किसी पोता लगाने के कार्य में लगे जलयान के आकार की इस नियम के पैरा (घ) में विहित बत्तियों और शब्दों विकाया जाएगा :

- (1) एक उद्दर्श्यामी रेखा में जीन पूर्णवलयाकार बत्तियों जहाँ से ऐ अच्छी तरह विस्तारी हैं। इन बत्तियों में उच्चतम

और नियन्त्रित बत्तियों लाल होंगी और मध्य बत्ती लाल होंगी।

(2) अन्तर्राष्ट्रीय संहिता व्यज "अ" को एक यूँ प्रतिकूली जो लम्बाई में : सीटर से कम त हो दिक्षायों जाएगी तभी और से उसकी वृद्धयान सुनिश्चित करने के लिए अवश्यक कार्रवाई को जाएगी।

(3) सुरंग उठाने के बायी के लगा जलयान, नियम 23 में शर्कित जलतित जलयान के लिए विहित बत्तियों के अतिरिक्त या नियम 30 में लंगर डाले जलयान के लिए विहित बत्तियों या शब्दों के अतिरिक्त, जैसा यथोचित हो, तोन पूर्ण बलयाकार हरी बत्तियों या सीन नेंद्र विकायेगा। इन बत्तियों या शब्दों से एक या मस्तूल पर या उसके पास और अग्र भाग के हर बाजू के अंत में एक एक होंगे। ये बत्तियों या शब्दों सुनिश्चित करेंगी कि किसी भौत्य जलयान के लिए इस सुरंग उठाने वाले जलयान में 1,000 सीटों के अंदर आमा चतुर्मुख है।

(4) 12 सीटर से अधिक लम्बाई के जलयानों को उनमें से गीता लगाने के कार्य में लगे जलयानों को छोड़कर इस नियम के विहित बत्तियों जी शाले विकाने की आवश्यकता नहीं है।

(5) इस नियम में विहित संकेत संकेत में जैसे और मद्द जाह्ने वाले जलयानों के संकेत नहीं हैं। ऐसे संकेत इन विनियमों के अनुरूप IV में विविध हैं।

नियम 28

स्व दृश्याव से निकड़

जलयान

स्व दृश्याव से निकड़ हुआ जलयान, नियम 23 में शर्कित जलयानों के लिए विहित बत्तियों के अतिरिक्त एक उद्दर्श्यामी रेखा में जीन पूर्णवलयाकार लाल बत्तियों या लेलानाकार जहाँ से वह स्पष्ट विकायी है, विकायेगा।

नियम 29

पायलट जलयान

(क) पायलट कार्य पर लगा जलयान नियन्त्रित विकायेगा :

- (1) मस्तूल शीर्ष पर या उसके मजबीक, एक उद्दर्श्यामी रेखा में जो पूर्ण बलयाकार बत्तियों, जिन में उपर की सफेद और नीके की लाल हों;
- (2) जलते समय, इनके अतिरिक्त, बगल बत्तियों और पीछल बत्ती;
- (3) लंगर पर होते समय उप पैरा (1) में विहित बत्तियों के अतिरिक्त नियम 30 में लंगर पर होने वाले जलयान के लिए विहित बत्ती, बत्तियों या शब्दों।

(घ) पायलट जलयान जब पायलट कार्य पर नहीं होता है, जब उसकी लम्बाई के तत्सम जलयान के लिए विहित बत्तियों या शब्दों विकायेगा।

नियम 30

लंगर डाले हुए भूस्तित जलयान

(क) लंगर डाला हुआ जलयान, जहाँ से वह स्पष्ट दृश्यावान हो, विन्यालित विकायेगा :

- (1) अपेक्षान में, एक पूर्ण बलयाकार सफेद बत्ती या एकरोप;
- (2) पीछल या उसके पास और उप पैरा (1) में विहित बत्ती से नियन्त्रित पर पूर्ण बलयाकार सफेद बत्ती।

- (क) 50 मीटर से कम लंबाई का जलयान, इन विवरण के तौता (क) में विहित बसियों के बदले पूर्ण जलयाकार मानक बनाए जाहों से वह स्पष्टतः बृद्धयान हो, विकायेगा।
- (ग) लंगर डाला हुआ जलयान और 100 तथा उसमें अधिक मीटर लंबाई का जलयान, उसके छोड़कों को प्रकाशित करने के लिए उपलब्ध चालू या तत्सम बसियों का भी उपयोग कर सकेगा।
- (घ) भूस्थित जलयान इस नियम के तौता (क) या (घ) में विहित बसियों और इनके अतिरिक्त, जाहों से वे स्पष्टतः बृद्धयान हो, विकायेगा:
- (1) एक उच्चवर्गाती रेका में यो पूर्ण जलयाकार यात्रा बसियों;
 - (2) एक उच्चवर्गाती रेका में तीन गेंद।
- (ङ) 2 मीटर से कम लंबाई का जलयान वह लंगर डालने के समय, संकीर्ण जलयान में या उसके नवाढ़ीक, लंगर स्थान के जलबाह या जाहों भव्य जलयान लानाव्यत. नौवालन करते हैं, उन स्थानों में या उसके पास नहीं हो, तब उसके लिए इस नियम के तौता (क) (घ) या (घ) में विहित बसियों या शाखों का विकाया आवश्यक नहीं है।
- (च) 12 मीटर से कम लंबाई के जलयान के लिए जब भूस्थित हो, इस नियम के पाप तौता (घ) (1) और (2) में विहित बसी या शाखों विकाया आवश्यक नहीं होगा।

नियम 31

सौंदर्य विकाय

समुद्री विकाय के लिए जहाँ इस भाग के नियमों में विहित स्थानों में विशिष्ट बसियों औल शाक्तों विकाया अव्यवहार्य हो, वहाँ वह जहाँ तक ही सके बसियों और शाक्तों जो विशिष्टता जीर स्थान में उसी के समान हो, विकायेगा।

भाग (अ) अव्याय लागू होने वाले

नियम 32

परिमाणाद्

- (क) "सीटी" शब्द से अभियेत है कोई भी अव्याय संकेतन व्यवहरण जो विहित सीटियों व्यवित करने में समर्थ हो और जो इन विनियमों के अनुसंधान III में विविध विवरण की पूर्ति करता हो।
- (ख) "सीटी सीटी" पद से लगावा एक संकेत की अवधि की सीटी अव्याय अभियेत है।
- (ग) "सीटी सीटी" पद से भारत से छह संकेत की अवधि की सीटी अव्याय अभियेत है।

नियम 33

एवनि संकेतों का उपकरण

- (क) 12 या उससे अधिक मीटर की लंबाई के जलयान पर एक सीटी और एक घंटी रवीं जायेगी और 100 या उससे अधिक मीटर की लंबाई के जलयान पर, इनके अतिरिक्त, एक माँग रेका जाएगा जिसके नाव तथा एवनि और घंटी के बाव तथा एवनि में संप्रम न हो, रखी जाएगी। सीटी, घंटी और माँग इन विनियमों के अनुसंधान III में विहित विशिष्ट विवरणों की पूर्ति करेंगे। घंटी या माँग या दोनों की जगह पर अन्य क्षेत्र करण जिनकी एवनि क्रमागत: उसी विशिष्ट नाव के अनुतार हो, ऐसे जाएंगे परन्तु तब जब कि आवश्यक संकेतों की कर चल एवनि संवेद समाप्त हो।

- (ख) 12 मीटर से ऊपर लंबाई के जलयान की विशेषता (क) में विहित बसियों के बदले पूर्ण जलयाकार मानक बनाए जाहों से वह स्पष्टतः बृद्धयान हो, विकायेगा।

नियम 34

जालन और बेताजनी संकेत

- (क) जब जलयान एक दूसरे की दृष्टिपथ में आते हैं, तब मार्गस्थल एवनि जलयान, इन नियमों के अनुसार प्राधिकृत या आवश्यक तैतरा बदलते समय, उस जालन को अपनी सीटी से विष्णु संकेतों द्वारा सुचित करेगा।

—एक छोटी सीटी अभियेत करने के लिए कि "मैं अपना मार्ग जालन बाजू की ओर बदल रहा हूँ";

—दो छोटी सीटियों से अभियेत करने के लिए कि "मैं अपना मार्ग डाला बाजू की ओर बदल रहा हूँ";

—तीन छोटी सीटियों अभियेत करने के लिए कि "मैं पीछल मीठन जाल रहा हूँ";

- (ख) छोटी सीटी जलयान युक्ति जालन करते समय, इस नियम के तौता (क) में विहित सीटी संकेतों के साथ ऐसे दीप संकेतों का भी प्रबंध करेगा जैसा उचित हो, दोहराये जायें:

- (i) इन दीप संकेतों का विष्णु महत्व होगा:

—एक दीप प्रकाश कीष अभियेत करने के लिए कि "मैं अपना मार्ग बाजू बदल रहा हूँ";

—दो दीपप्रकाश कीष अभियेत करने के लिए कि "मैं अपना मार्ग डाला बाजू की ओर बदल रहा हूँ";

—तीन दीप प्रकाश कीष अभियेत करने के लिए कि "मैं पीछल मीठन जाल रहा हूँ";

- (ii) प्रदेश प्रकाश कीष की अवधि लगाया एक संकेत की होगी प्रकाश कीषों की मध्यावधि लगाया एक संकेत की होगी, और एक के पश्चात् दूसरे संकेतों की मध्यावधि दो संकेत से अन्यून होगी;

- (iii) इस संकेत के लिए प्रयुक्त दीप, यदि सामाया गया हो तो पूर्ण-जलयाकार संकेत, कम से कम 3 मीलों के पारास तक बृद्धयान होने वाला और इन विनियमों के अनुसंधान I में विविध उपक्रमों का पालन करने वाला हो।

- (ग) जब संकीर्ण जलयान या जलबाह में एक दूसरे के दृष्टिपथ है:

- (1) अन्य जलयान को लायने का इच्छुक जलयान नियम 9(इ)(1) के अनुपालन में अपनी इच्छा विष्णु संकेतों द्वारा अपनी सीटी से सुचित करेगा;

—दो संदी सीटियों के पश्चात् एक छोटी सीटी अभियेत करने के लिए कि "मैं मुझ्हारी जालन बाजू से आगे जाने का इच्छुक हूँ";

—दो लंबी सीटियों के पश्चात् दो छोटी सीटियों अभियेत करने के लिए कि "मैं मुझ्हारी डाला बाजू से आगे जाने का इच्छुक हूँ";

- (ii) नियम 9(इ)(1) के अनुरार अभिलंबित होने वाला जलयान अपनी सीटी से अपनी सहनति विष्णु संकेतों द्वारा सुचित करेगा;

—एक संदी, एक छोटी, एक संदी और एक छोटी सीटी, इस जब में।

(प) एक दूसरे के वृद्धियम में आये जलयान जब एक दूसरे की ओर छते हैं और किसी जलयान बोरों में से कोई जलयान दूसरे जलयान के उद्देश्य पर सहजतर समझ न जाए, या संशय में हो कि अन्य जलयान में टक्कर के निवारणार्थ वर्षान्त कार्रवाई की है कि नहीं, तो जो जलयान संग्रामकस्या में हो, वह तुरंत अपनी सीटी से एक के बाव एक पांच छोटी सीटियां से बेकर ऐसा संशय तुचित करे। ऐसा संकेत कम से कम पांच छोटी और चारों प्रकाश कोंडों के बीच संकेत से पूरक हो।

(इ) मोड या नहर के खेत या जानबाहू को ओर घुड़ने वाला जलयान जहाँ अन्य जलयान मध्यवर्ती बाइंग से अस्पष्ट विचारी होते हैं, एक लंबी सीटी बजायेगा। ऐसा संकेत किसी जलवीक आने वाले जलयान से जो मोड के आसपास में या मध्यवर्ती बाइंग के पार्वत में अवल भेत्र में हो, एक लंबी सीटी से प्रस्तुति दित होगा।

(ब) यदि जलयान पर लगायी सीटियां 100 मीटरों से अधिक अंतर पर हों, तो आलन और खेतावनी संकेत होते हैं कि लिए केवल एक ही सीटी वा उपयोग किया जाएगा।

नियम 35

प्रतिरक्षित वृद्धियता में इक्विटी संकेत

प्रतिरक्षित वृद्धियता के भेत्र में या उसके नजदीक, यदि या रात में इस नियम में विहित संकेत नियम प्रकार प्रयुक्त किये जाएंगे :

(अ) यासित आसित जलयान पानी में जलते समय 2 मिनटों से अनधिक के अन्तरालों से एक लंबी सीटी बजायेगा।

(ब) यासित-आसित जलयान जलसे-जलसे एक जाता है और पानी में आगे नहीं बढ़ पाता है तो वह यी नियमों से अनधिक अन्तरालों से वो लंबी सीटियां जलवर्ती सीटी के बीच अवधि लगाने 2 सेकेंड की होती, बजायेगा।

(ग) अक्षमानाधीन जलयान, आलन अन्तरा में प्रतिरक्षित जलयान स्वदृश्य से नियम जलयान, पाल जलयान, सरस्यन में जला जलयान और जीवर्णय या दूसरे जलयान को इकेसने के कार्य में सता जलयान, इस नियम के पैरा (क) या (ब) में विहित संकेतों के बदले, जो प्रिन्डे से अनधिक के अन्तरालों से जगतार तीन सीटियां भर्वात् एक लंबी सीटी के बाव यी छोटी सीटियां बजाएगा।

(घ) नरस्तन में जागा जलयान, जब लंगर डाला हुआ होता है और नरां डाला हुआ अपना कार्य करते समय पैतरा बदलने की वर्षी समर्थता में प्रतिरक्षित जलयान इस नियम के पैरा (ब) में विहित संकेतों के बदले इस नियम के पैरा (ग) में विहित संकेतों बजाएगा।

(ङ) नीकार्कित हुआ जलयान या यदि एक से अधिक जलयान नीकार्कित हैं हों, तो असित नीकार्कित हुआ जलयान, यदि भर्ती लिया हुआ हो लगतार चार सीटियां, 2 मिनटों से अनधिक के अन्तरालों से बजायेगा, जैसे एक लंबी के बाव तीन छोटी सीटियां। अब अवहार्य हो, यह संकेत नीकार्कित जलने वाले जलयान द्वारा दिये गये संकेत के बाव तुरंत दिया जाना जाएगा।

(च) अब दुकेसने वाला जलयान और आगे ढकेल दिया जाने वाला जलयान एक संयुक्त एकाळ में दृढ़ता से मंदेनित हो तो जे अधिक आगे जलयान की वरत्त गया जाएगा और इस नियम के पैरा (ङ) पर (च) में विहित संकेत होगा।

(छ) लंगर डाला हुआ जलयान, एक नियम से अनधिक के अन्तराल से गीग्राता से लगाने 5 सेकेंड के लिए धंडी बजायेगा। 100 मीटर या उससे अधिक लंगराई के जलयान में उसके अपभ्रान्त में धंडी बजाई जाएगी और इस धंडी के बाव तुरंत जलयान के पार्वत बाग में मार्ग रीर्तता से लगाने 5 सेकेंड तक बजाया जायेगा। लंगर डाला हुआ जलयान, इसके अतिरिक्त उसके स्थान सथा नजदीक आने वाले जलयान की संभाल्य टक्कर के जलने की सूचना देने के लिए, लगातार तीन सीटियां, जैसे एक छोटी, एक लंबी और एक छोटी, के बाव से बजायेगा।

(ज) भूस्थित जलयान धंडी संकेत और यदि आवश्यक हो, इस नियम के पैरा (छ) में विहित भाग संकेत, तथा इसके अतिरिक्त, धंडी पर तीन स्वतंत्र और विशिष्ट व्यक्ति करेगा तो गीग्राता से बजाने वाली धंडी के विवित पहले और तुरंत बाव में होगी। भूस्थित जलयान, इसके अतिरिक्त, उचित धंडी संकेत करेगा।

(झ) 12 मीटरों से जल स्वार्वाई के जलयान यो एपर्फ्युक्शन संकेत देना बाब्यकर नहीं होगा परन्तु, यदि यह ऐसा न करे, तो 2 मिनटों से अनधिक के अन्तराल से तुरंत अन्य संकेत व्यक्ति करेगा।

(ञ) पायलट जलयान जब पायलट कार्य पर लगा हो, इस नियम के पैरा (क), (ब) या (छ) में विहित संकेतों के अतिरिक्त चार छोटी सीटियां का परिवर्य संकेत देगा।

नियम 36

व्यापार व्याकरणित करने के संकेत

यदि दूसरे जलयान का व्यापार व्याकरणित करना आवश्यक हो तो कोई भी जलयान ऐसा हीष्य पर व्यक्ति संकेत कर सकेगा जो गलती से इन में अन्यत्र प्राविहित कोई संकेत न समझ लिए जाए, या जलते को दिया में अपनी रार्च बरती की प्रकाश धौध इस प्रकार विकाएगा जि कोई जलयान स्वयंसीत न हो जाय। दूसरे जलयान का व्यापार व्याकरणित करने वाला कोई धीप ऐसा होगा जहाँ वह गलती से जीवालन के लिए सहायता करने वाला न समझ लिया जाए। इस नियम के उद्देश्य के लिए स्ट्रीप धीप जैसे उच्च तीव्रता विरामी या परिवर्धी धीप का उपयोग नहीं किया जाएगा।

नियम 37

संकेत संकेत

जब कोई जलयान संकेत में हो और मदद चाहता हो, तो यह विनियमों के अनुच्छेद IV में विहित संकेतों का उपयोग करेगा या दियाजायेगा।

नियम 38

सूट

कोई जलयान, (या जलयानों का बांध) परन्तु तब जब कि वह सभी उच्चर नियमार्थ अन्तर्राष्ट्रीय विनियम, 1960 की अपेक्षाओं का अनुपालन करता हो, और जितका पठाय डाला गया हो या जो इन विनियमों के प्रयुक्त होने से पूर्व विवरणी अवलम्बन के अनुच्छेद में हो, नियम प्रकार उसका अनुपालन करने से सुन्त किया जाएगा :

(क) नियम 22 में विहित परासों की वर्तियों के संस्थापन के लिए इन विनियमों को सागृ करने की तारीख के बाव चार वर्षी तक :

(ख) इन विनियमों के उपरांय 1 अनुभाग 7 में विहित विशिष्ट विवरण के दैर्घ्य के वर्तियों के संस्थापन के लिए, इन विनियमों की लागू करनी की तारीख के बाव चार वर्षी तक।

- (ग) सामाजिक से मैट्रिक एकाक में परिवर्तन, और मायारों के पुर्णांक के परिणाम स्वरूप अस्तित्वों के पुनर्स्थापन के लिए स्थायी छूट।

(घ) (i) इन विनियमों के उपार्वंश 1 के भाग 3(क) के विवरणों के परिणाम स्वरूप 150 मीटरों से ऊपर लंबाई के जलयान पर मस्तूल बहितरों के पुनर्स्थापन के लिए स्थायी छूट।

(ii) इन विनियमों के उपार्वंश 1 के भाग 3(क) के विवरणों के परिणाम स्वरूप 150 पा ऊपर से अधिक मीटरों की लंबाई के जलयान पर मस्तूल बहितरों के पुनर्स्थापन के लिए, इन विनियमों के लागू होने की तारीख के बाबत नीचे वर्णीय तक।

(ङ) इन विनियमों के उपार्वंश 1 भाग 2(घ) के विवरणों के परिणाम स्वरूप मस्तूल बहितरों के पुनर्स्थापन के लिए, इन विनियमों के लागू होने की तारीख से भी बर्ची तक।

(च) इन विनियमों के उपार्वंश 1 के भाग 3(घ) के विवरणों के परिणाम स्वरूप बगल बहितरों के पुनर्स्थापन के लिए इन विनियमों के लागू होने की तारीख से भी बर्ची तक।

(छ) इन विनियमों के III में विद्युत इकानि उपलकड़ी की आवश्यकता के लिए, इन विनियमों के लागू होने की तारीख से भी बर्ची तक।

(ज) इन विनियमों के मनुरंश I के भाग १(घ) के विवरणों के परिणाम स्वरूप पूर्ण जलयानार बहितरों के पुनर्स्थापन के लिए स्थायी छूट।

पर्याप्त-1

वर्तितर्थी तथा शाश्वतों के स्थान और तकनीकों विवरण

१. परिचय : यह "जोशु के ड्रार की झंडाई" से परिवर्तन इक के उपरान्त की झंडाई अभिप्रेत है। यह झंडाई अस्ती के इतान के नीचे से छल्लमासी स्थिति में जापी जाएगी।

2. वरितयों की कठबैगासी स्थिति और जगह : (क) 20 या उससे अधिक पर्देर की लंबाई के रास्ते जासित जलयान पर मस्तूल बतिया निम्न प्रकार रखी जायेगी :

(1) अग्र मस्तूल बरती, या यदि केवल एक ही मस्तूल बरतो वहाँ जी गयी हो, तो वह बरती, खोजू के ऊपर, 6 मीटर से अधिकू की ऊंचाई पर, और यदि जलवायन की ऊंचाई 6 मीटर से अधिक हो, तो खोजू के ऊपर ऐसी ऊंचाई पर, जो इस ऊंचाई से कम न हो, तथापि, बरती खोजू से 12 मीटर से अधिक ऊंचाई पर रखने की आवश्यकता नहीं।

(2) अब यो मस्तुक बरियाई अबू की जाती है, तो यो प्रकृत्या अबू
अबू जाती है इन्हें देखना में कम से कम 4-5 बींदूर
अधिक लंबाई पर यो ।

(ब) गरिम-जालित जलयारों की मस्तूल वर्तियों का इर्वानामी दिता है भगतर ऐसा होगा जाहिप्र प्रवाह की सर्व सामान्य स्थितियों में पीछल बढ़ती, पीछल से 1,000 मीटरों की दूरी से समुद्री सतह से उत्तरे पर अप बढ़ती है पर और बल्ला अप से दिखायी है जाय ।

(ग) 12 मोटर के परंतु 20 मोटर से कम संवर्ती के गणित चलित व्यवस्था को मस्तूल बताते, गणल के ऊपर 2.5 मीटर से ऊपरी तक पहुँचनी पर रखी जायगी।

(ए) 12 भौतिक से कम लैवर्ड का शासित चालित जलदान परमोक्षम बहती, यह से ड्रायर 2-3 मीटरों से जान्मन की लैवर्ड पर बहुत दरोगा। तापांपि, प्रस्तुत बहती, अथ अगल वस्तियों पर्यंत लैवर्ड बहती के मरिटिमित

बहन की जाती है, तथ ऐसो मस्तूल वर्ती बगल इरियों से दम से दम 1 मीटर की ऊँचाई पर बहन की जायगी।

(इ) गवित-जालित जलयान के लिए विहित हो या तीन मस्तूल वर्तियों में से एक मस्तूल बत्ती, जलयान जब भौकर्षण या अध्य जलयान को हकेलने के कार्य में सगे, उसी स्थिति में इसी जागरी, और शरित-जालित जलयान को अप्र मस्तूल बत्ती या पीछाल मस्तूल बत्ती होती है परन्तु यह तथ जब कि यदि वह पीछाल मस्तूल पर बहन की जाए तो पीछाल मस्तूल पर निम्नतम बत्ती अप्र मस्तूल बत्ती से ऊर्ध्वगामी दम से कम 4.5 मीटर ऊर्ध्वार्द्ध पर बहन की गई है।

(क) (i) मस्तूल यत्ती पा नियम 23(क) में विहित वरिताया इस प्रकार एसी घटहिए कि वे उप पैरा (ii) में विहित के सिवाय सभी अध्य बाधाओं के ऊपर और एप्ल विधायों पे हैं।

(2) वब मियम 27(क) (1) पा मियम 28 द्वारा विहृत मस्तुल बरितयों के नीचे पूर्ण वलयाकार बरितयों वहम करना अवश्यवहार्य हो, तो वे पीछाल मस्तुल बरसी (बरितयों) के ऊपर या अपने मस्तुल बरसी (बरितयों) और पीछाल मस्तुल बरसी (बरितयों) के बीच उच्चवर्गासी वहम की जाएं, परन्तु यह तब जब कि द्रूपरे भासले में इस अनुबंध के भाग 3(ग) की अवेदाओं का अनुवालन किया जाए।

(४) भवित-जालित जलयान की बगाव बतियाँ ऐसो झेंडाई, जो खोयू के ऊपर पर्तुं अथ मस्तूल घटती की झेंडाई के तीन औयाई से अनधिक हो, पर रखो जायाए। ये इनी कम झेंडाई पर भी नहीं होनी चाहिए कि उनक बतियाँ में हस्तक्षेप करें।

(ज) 20 भीट से कम लंबाई के शक्ति-वालित अलयान पर बगल वसिया यदि संयुक्त लालटेन में पहन की गई हो तो वह भस्तृत बत्ती के कम से कम 1 भीट लाले रखनी चाहिए।

(क) जब नियम, दो या तीन वर्तियाँ पक उच्चारण की रेखा में बहुत अलग को साझे जाते हैं, तब उनके स्थान नियम प्रकार होंगे :

(i) 20 या उससे अधिक अधिक मीटरों की लंबाई के अलगाव पर ऐसी बतियाँ 2 मीटर से अधिक दूरी पर रखी जायेगी, और इन बतियों में से, नीकर्ण के लिए आवश्यक बहती सिकाय, निम्नतम अस्ती प्रोलू के कपर 4 मीटर से अधिक हो दूरी पर, रखी जायेगी।

(ii) 20 भीटर से कम लंबाई के जलवायन पर येसो बहिर्दयों ।
 भीटर से अन्यून को दूरी पर रखी जायेगी और इन बहिर्दयों
 में से निम्नतम, घोटीर्धी के लिए आवश्यक बस्ती को छोड़कर,
 घोल के रूप, 3 सेवनों से अभ्यन्त की दूरी पर रखेगी ।

(iii) अब तीन वरित्यां वहम को जातो हैं, तथा वे समाम अंतर पर बैठेहो।

(का) भर्तव्यम् जलयान् के लिए विहित दो पूर्ण जलयाकार वरितयों में से निम्न बत्ती, जब जलयान् भर्तव्यम् में लगा हो, जगल वरितयों के ऊपर, दो उर्ध्वर्गानी वरितयों के बीच के अंतर के कुण्डे धंतर से अन्ध्रम् की छोड़ा पर होणे ।

(d) नियम 30(क)(1) से विहित अप्र सीगर बत्तों, जब वो अस्तियां बहन को जाती हैं, भीरचल बत्तों के ऊपर 4.5 मीटर से अधिकू के अंतर पर होगी। 30 वा उससे अधिक मीटर वी लंबाई के अल्पात्म पर, वह अप्र सीगर बत्तों, छोड़ू के ऊपर 6 मीटर से अधिकू के अंतर पर होगी।

3. वरित्यां की संतुष्टि समानात्मक रूपस्थि और श्वास : (क) वरित्यां की संतुष्टि समानात्मक रूपस्थि और श्वास वरित्यां विशेष नहीं है, तथा

उसमें लैंबाई समानांतर दूरी, जलयान की लैंबाई के आधे से कम नहीं होती। चाहिए परम्परा 100 मीटर से अधिक होने की आवश्यकता नहीं। अप्रैल तक, बाया से जलयान की लैंबाई के अनुपयोग से अनधिक अंतर पर रखी जायेगी।

(क) 20 या उससे अधिक मीटर की लैंबाई के जलयान पर, बाया वर्तियों अप्रैल समानांतर के सामने नहीं रखी जायेगी। वे जलयान की बाजू पर या उसके पास रखी जायेगी।

(ग) अब नियम 27(ज)(1) या नियम 28 में विहित वर्तियों अप्रैल समानांतर (वर्तियों) और पीछड़न मंत्रालय दर्ती (वर्तियों) के बीच उद्घवगामी रखी जाती हैं तब वे पूर्ण बलयाकार वर्तियाँ जलयान की आधे तक तक भी दिखा सकते हैं तब वे पूर्ण बलयाकार वर्तियाँ जलयान पर रखी जायेगी।

4. परस्पर जलयानों, ड्रेजरों और अबजल कार्यवाही में लगे जलयानों के विशेषज्ञ वर्तियों के स्थानों के विवरण : (क) नियम 26(क)(ii) में विहित परस्पर में लगे जलयान से दूरस्थ गोदर की दिवारीक वर्ती; लैंबिज से सामानांतर, 2 मीटर से अधिक और वे पूर्ण बलयाकार बाल और सफेद वर्तियों से 6 मीटर से अनधिक भी दूरी पर, रखी जायेगी। वह वर्ती, नियम 26(ग)(i) में विहित पूर्ण-बलयाकार सफेद वर्ती से अनधिक की ऊंचाई पर और अगल बरत्ती से अन्यून भी ऊंचाई पर रखी जायेगी।

(क) नियम 27 या अबजल कार्यवाही में लगे जलयान पर, नियम 27 (घ) (i) और (ii) में विहित, वर्तित बाजू और/या जिस बाजू से भारीकरण करना सुरक्षित है यह रिकाले वाली विस्तारों और शावलें, अत्यधिक अवधारणीय समानांतर दूरी पर किन्तु किसी भी दशा में नियम 27(घ)(i) और (ii) में विहित वर्तियों पर शावलों से 2 मीटर से अधिक भी दूरी पर रखी जारेगी। किसी भी दशा में, इन वर्तियों या शावलों में से उच्चतम नियम 27(घ)(i) और (ii) में विहित तीन वर्तियों या शावलों में से नियन्त्रण से भविक से अधिक ऊंचाई पर नहीं होने चाहिए।

5. बगल वर्तियों के लिए पट्टा :—20 मीटर या उससे अधिक लैंबाई के जलयान की बगल वर्तियों के भीतरी आवरण धूमिल काले रंग के हों, और हस अनुबंध के भाग 9 को अनेकाओं को अनुरूप रूप से इसे हों। 20 मीटर से कम लैंबाई के जलयान पर यह इस अनुबंध के अनुसार 9 की अनेकाओं का अनुशासन करता आवश्यक होता जाता वर्तियों जिनमा भीतरी आवरण धूमिल काले रंग का ही लगाई जाएंगी। संयुक्त लालडेन, जिसमें एक ही उद्घवगामी संतु हो और हरे एवं लाल भावों के बीच एक अति संकीर्ण विभाजन हो, के बाहरी आवरण लगाने की आवश्यकता नहीं।

6. शब्दों :—(क) शब्दों काले रंग की और निम्न आकारों की होंगी।

- (i) गंद द्वारा ध्यास 0.6 मीटर से कम नहीं होगी,
- (ii) शंकु के निवृत्ति तल का ध्यास 0.6 मीटर से अन्यून हो और ऊंचाई उसके ध्यास के बराबर हो,
- (iii) बेलन का ध्यास कम से कम 0.6 मीटर और ऊंचाई उसके ध्यास के बुनी हो,
- (iv) समन्वयन शब्द में उपरोक्त (iii) में यथा परिमाणित संयुक्त तल के दो शंकु होंगे।

(ग) शब्दों के मध्य उद्घवगामी अन्तर कम से कम 1.5 मीटर हो।

(ग) 20 मीटर से कम लैंबाई के जलयान में कन परिवर्तियों की शब्दों किन्तु जो जलयान के आकार के अनुगात में हैं प्रयुक्त की जायेगी और मध्य की दूरी तरतीब कर से कन की जाएंगी।

7. वर्तियों के रंग का विविधता :—सभी सौधालेन वर्तियों की वार्तिकता अन्तर्राष्ट्रीय प्रवैषित भाषाओं (साजावाई) द्वारा प्रत्येक रंग के लिए निर्दिष्ट भारेज के लेव को सीमाओं से समाविष्ट निम्न भावकों के अनुसार हो:

प्रत्येक रंग के लेव की सीमाएं समन्वित कोण द्वारा विभाजित हुए हो गयी हैं जो निम्न प्रकार हैं :—

(i) +सफेद

एक्स	0.525	0.525	0.452	0.310	0.310	0.443
बाय	0.382	0.440	0.440	0.348	0.283	0.382

(ii) हरा

एक्स	0.028	0.009	0.300	0.263
बाय	0.385	0.723	0.511	0.356

(iii) लाल

एक्स	0.680	0.660	0.735	0.721
बाय	0.320	0.320	0.265	0.239

(iv) पीला

एक्स	0.612	0.618	0.575	0.575
बाय	0.382	0.382	0.425	0.406

8. बरितयों की तीव्रता :—(क) बरितयों की ग्रूप 1 तीव्रता निम्न सूत्र का उपयोग करते हुए परिकलित की जायेगी।

$$1-3 \cdot 43 \times 10^6 \times T^2 \times D$$

जहाँ + से अभिव्रेत है कार्यरत व्यवस्था में बरितयों को एकत्र में बरित तीव्रता

T से अभिव्रेत है द्वारा घटक 2×10^{-7} लम्ब,

D से अभिव्रेत है समुद्री मीलों में यस्तों की दुरी का परामर्श (सीरित परामर्श)।

K से अभिव्रेत है वायुसंग्रहीय पाठ्यानुप्रवाह।

विहित बरितयों के लिए K का मूल्य 0.3 होगा जिससे वायुसंग्रहीय वृश्चिका लगभग 13 समुद्री मीलों के अनुकूल होगी।

(प) सूप से निकले भौतिकों का चुनाव निम्न सारणी में दिया गया है:

यस्तों वृश्चिका का परामर्श (सीरित परामर्श) (समुद्री मीलों में)	बरितों की बोरित तीव्रता एकक	बरितों की बोरित $K - 0.8$ के लिए	I
D			
1	0.9		
2	4.3		
3	12		
4	27		
5	52		
6	94		

दिप्पणः भौतिकता बरितयों की अधिकतम अधोरीय तीव्रता अनुचित कींवृत्ति से बदलने के लिए सीमित हो। इसे अधोरीय तीव्रता के परिवर्तनात्मक विवरण द्वारा प्राप्त नहीं किया जाएगा।

9. बीतिज घण्ट

(क) (1) ध्रुव दिशा में, भौतिकता पर लगायी गयी बरितयों अपेक्षित ग्रूपतम तीव्रता दिखाने गती हैं। विहित लोकों के द्वारा 4 और 3 अंशों के बीच में व्यवहार्य विवरण तक पहुंचने के लिए तीव्रताएँ कम की जायेंगी।

(2) पोलार बरितयों, मस्तल बरितयों और ध्रुव के पांचे 22.5 अंशों पर व्यापक बरितयों के लिए, नियम 21 में विहित सीमित लोकों में, बीतिज रात्यान के ऊपर 5 अंशों तक ग्रूपतम अपेक्षित तीव्रताओं का अनुरक्षण किया जाता। बीतिज लोकों में 5 अंशों से विहित सीमाओं तक तीव्रता 50 प्रतिशत से कम की जायेगी; विहित सीमाओं के द्वारा 3 अंशों से अनुविक्षित के व्यवहार्य विवरण तक, धीरे धीरे कम की जायेगी।

(क) नियम 30 में विहित लोक बरितयों जो ध्रुव के उत्तर अध्यवशायी छंबार्य पर एको नहीं जाती, से अध्य पूर्ण वलयान्तर यतियों इस प्रकार स्थापित की जायेंगी कि 6 अंशों से अधिक कीणीय लोकों के नवय में मस्तल, मायोडोल या विग्रासी द्वारा आधित न हो जाय।

10. उच्चर्वात्मीय घण्टः

(क) व्यापक व्यवस्था की अवधारणा बरितयों को छोड़कर विहित बरितयों के उच्चर्वात्मीय घण्ट मह मुनिविक्षित करेंगे कि :

(1) बीतिज के ऊपर 5 अंशों से बीतिज के भीते 5 अंशों तक सभी कोणों से कम से कम अपेक्षित ग्रूपतम तीव्रता को अनुरक्षण किया है;

(2) बीतिज के ऊपर 7.5 अंशों से बीतिज के भीते 7.5 अंशों तक कम से कम 60 प्रतिशत अवेक्षित ग्रूपतम तीव्रता का अनुरक्षण किया है।

(3) पाल जलयान के संबंधीय विद्युत बरितयों के उच्चर्वात्मीय घण्ट मुनिविक्षित करेंगे कि :

(1) बीतिज के ऊपर 5 अंशों से बीतिज के भीते 5 अंशों तक सभी कोणों से कम से कम अपेक्षित ग्रूपतम तीव्रता का अनुरक्षण किया है;

(2) बीतिज के ऊपर 25 अंशों से बीतिज के भीते 25 अंशों तक कम से कम 50 प्रतिशत अवेक्षित ग्रूपतम तीव्रता का अनुरक्षण किया है।

(4) विद्युत से अध्य बरितयों के विवर में, जहाँ तक संभव्य हो, इन विवरिंगों का अनुग्राहन किया जायेगा।

11. अविद्युत बरितयों की तीव्रता :— अविद्युत बरितयों, जहाँ तक संभव्य हों, ग्रूपतम तीव्रताओं की अनुरूपता करेंगी और इस अनुरूप्य के अनुमान 8 में दो गई सारणी में निर्दिष्ट है।

12. युक्ति-वालन बरतों :—इस अनुबंध के विवर 3(क) के उच्चर्वात्मीय की पूर्ति करने पर भी नियम 34(क) में विद्युत युक्ति-वालन बरतों आये और पीछे के उत्तर उच्चर्वात्मीय छंब में एको जायेंगे, जहाँ मस्तुल बरतों पा घटती है, और जहाँ अध्यवशायी हों, अग्र मस्तुल बरतों से कम उच्चर्वात्मीय दिखाया में 2 मीटर ऊपर पहुंच यह तत्र बढ़ाता है, बहुत पार्व यस्तुल बरतों पर उच्चर्वात्मीय दिखाया में, कमर यानी भी 2 मीटरों से अध्यून दो ध्रुवों पर, बहुत की जाती है, युक्ति चालन बरती, यदि लगायी हो, मस्तुल बरतों से उच्चर्वात्मीय 2 मीटर से अध्यून की दूरी पर, जहाँ से वह स्वयं दिखायी देते, लगानी चाहिए।

13. अनुमोदन.—वालटेनो और शक्लों का निर्वाचन तथा अलयान पर उनका संस्थापन, उन राज्यों के जिलों प्रमें फूटाने के लिए जलयान हक्कदार है, समुक्षित प्राधिकारियों के समावानन्द बढ़ाव देते होता चाहिए।

बन्धुवाय-II

निकटवर्तीय सामिलिय में संस्थान में उन संस्थान

जलयान के विवर जलिविक्षित होते हैं

1. संस्थान :—इसमें उल्लिखित बरितयों, भवि नियम 26(क) के अनुसार में दिखायी नहीं हैं, तो ऐसे एवं पर जहाँ जै दृष्टियाँ दिखायी दें, तर्ही जायेंगी। कम से कम 0.9 मीटर की दूरी पर किन्तु नियम 26(क) (1) और (ग) (1) में विहित बरती से निम्न स्तर पर होंगी। बरितयों बीतिज की जाती और कम से कम 1 मील की किन्तु मस्तुल बरताओं के लिए इन नियमों द्वारा विहित बरितयों की दूरी से कम दूरी तक दृष्टियान हों।

2. द्रुतियों के लिए संकेत :—

(क) द्रुतियों में समें हुए जलयान, जाहू वे दोस्तान या पेंग-बिक गोपर का उपयोग करते हों, निम्न विद्युत दिखायेंगे:

(1) जहाँ के जलयान दोस्तान या पेंग-

एक उच्चर्वात्मीय दो सकेद बरितयों;

- (2) उनके जाल दौड़ाते समयः
एक उर्जावानी रेखा में एक जाल बत्ती के ऊपर एक संकेत वर्ती;
- (3) जब जाल योजना से वाहित होता है:
एक उर्जावानी रेखा में वो जाल अवित्याः;
- (क) युग्म फ्रॉलिंग में लगा हुआ हर जलयान विकाये ।
- (1) रात्रि के समय, युग्म के दूसरे जलयान को बदा में और अप्रभाग को और अवित्याः परिवर्तित कर्त्तव्याः;
- (2) उनके जाल फैक्टरे या वाँचते समय, या उनके जाल तेजो से वाहित होते हैं तब उपर नियम 2(क) में विवित अवित्याः ।

3. एवं सोन्दर के लिए संकेत

पर्सिसाम योग्य वाले जलयान जब परस्पर में लगे रहते हैं तब एक उर्जावानी रेखा में वो योजना अवित्याः विकायाः । ये अवित्याः पारी पारी से, सर संकेत समान वोक्ति सम्भाविति से जालकोगो । ये अवित्याः, जलयान के बहुत उसके परस्पर योग्य से प्रविष्टिवित होने पर विकायी जायेगी ।

अनुबंध-III

ज्वलित संकेत उपस्कर्ता के तकनीकी विवरण

1. सीटियों

(क) अव्यतीत की आवृत्तियाँ और परास

संकेत की भूमि अवृत्ति 20—700Hz के परास के मध्य रहेगी । सीटी संकेत अव्यतीत का परास, उन्हीं आवृत्तियों द्वारा निश्चित किया जायेगा, जिनमें, भूमि और/या एक या अधिक उच्च आवृत्तियाँ जो 180—700Hz के परास (± 7 प्रतिशत) के मध्य रहता है, सम्भिलित हीं और जो निम्न विवित 1(ग) में विवित ज्वलि वाल स्तर के विवरण रहते ।

(घ) भूमि आवृत्तियों की सीधाई

सीटी लक्षणों को विस्तृत विवरण निश्चित करने के लिए, सीटी की भूमि आवृत्ति निम्न सीधाई में होगी :

- (1) 70—200Hz, 200 मीटर या उससे अधिक सीधाई के जलयान के लिए;
- (2) 130—350Hz, 75 मीटर परंतु 200 मीटरों से कम सीधाई के जलयान के लिए;
- (3) 250—700Hz, 75 मीटरों से कम सीधाई के जलयान के लिए ।

(ग) ज्वलि संकेत सीधता और अव्यतीत परास

जलयान में लगायी सीटी, सीटी की अविक्रितम तोक्ता की विशा में और उससे 1 मीटर की दूरी पर, 180—700Hz (± 7 प्रतिशत) आवृत्तियों के परास में, कम से कम एक $\frac{1}{3}$ आवृत्ये पट्टी में, निम्न सारणी में निश्चित अंकों से अविधिक का ज्वलि वाल स्तर निर्माण करें ।

जलयान की लंबाई मीटरों में

1 मीटर पर $1/3$ अव्यतीतपरास
आवृत्ये पट्टी स्तर समुद्री सीधाई में
अविधिक
dB में
 $2 \times 10^{-5} W^2/n$

200 या अधिक	143	2
75 परंतु 200 से कम	138	1.5
20 परंतु 75 से कम	130	1
20 से कम	120	0.8

उपरोक्त साइटों में दिया अव्यतीत परास दुर्घटनार्थ है और समझ, जहाँ तक सीटी उसके अव्यतीत लंबे, (250Hz पर केन्द्रीत अवृत्ये पट्टी में 68 dB और 500Hz पर केन्द्रीत अवृत्ये पट्टी में 63dB विवरणायाः), के पास सामान्य पृष्ठ भूमि कोलाहल स्तर सम्या प्रगात धात की स्थितियों में, जलयान के अप्र अज पर 80 प्रतिशत सुनाई वै होता है अव्यतीत में परास, जहाँ तक सीटी सुनाई वै जाती है, अवृत्ये परिष्वर्तनशील और दूसरे कप से मौसम स्थिति पर निर्भर होता है; दिये गये मूल्य प्राकृतिक समस्ये जायेंगे परंतु, ध्वनि स्तरों के पास तेज हवा या तीव्र परिवात कोलाहल स्तर की अव्यतीत के अधीन, परास बहुत कम हो सकता है ।

(घ) दिवकरीक भूमि धंधे

दिवकरीक सीटी का ज्वलि वाल स्तर, अप्र के ± 45 अंशों के मध्य के अवित्ये अवृत्ये की में अव्यतीत की किसी भी विशा में विवित ज्वलि वाल स्तर के लंबे, अप्र किसी भी विशा में ज्वलि वाल स्तर 10dB से अविधिक होगा, ताकि किसी भी विशा में परास, कम से कम अप्र अवृत्ये के परास के बाधे के बराबर होगा । ज्वलि वाल स्तर, उस $1/3$ अवृत्ये पट्टी, जो भूमिता परास निश्चित करती है, में नापा जायेगा ।

(इ) स्टेटियों की जागहें

जब विकरीक सीटी, जलयान पर केवल एक ही सीढ़ी के कम में प्रयोग लगायी जाती है, तब वह उसकी अविक्रितम सीधता, सीढ़ी सामने की विशा में विकाये हुए, स्थापित की जायेगी ।

जलयान पर सीढ़ी, जितनी ही सके उसकी लंबाई पर रखनी चाहिए, इसलिए कि आधारीय से उत्तरन ज्वलि की गतिमंत्रिता और कर्मवारी वर्ग को संतुष्ट अव्यतीतरा कर सके । जलयान के अव्यतीत, स्टेटियो का ज्वलि वाल स्तर 110dB(A) से अविधिक और जहाँ तक अव्यतीत हो, 100dB(A) से अविधिक हो ।

(ज) एक से अधिक सीटियों का संस्थापन

यदि सीटियों 100 मीटर से अधिक दूरी पर लगाई गयी हीं तो वे इस प्रकार अव्यतिगत कर से लगायी जाएंगे कि वे सब एक साथ न बजें ।

(झ) संयुक्त सीढ़ी प्रणालियाँ

यदि आधारीयों की उपस्कर्ता की जारण किसी एक सीढ़ी का या उपरोक्त पैरा 1(1) में विविड सीटियों में से किसी एक का इति लंबे बहुत कम संकेत स्तर का एक परिवेश हो सकता है, तो इस कमी की पूर्ति करने के लिए संयुक्त सीढ़ी प्रणाली की सिफारिश की जाती है । इस नियम के उद्देश्य की पूर्ति के लिए संयुक्त सीढ़ी प्रणाली को एक ही सीढ़ी के कम में मात्रा जाएगा । संयुक्त प्रणाली की सीटियों 100 मीटर से अविधिक की दूरी पर स्थित होंगी और एक साथ बजेंगी । किसी भी एक सीढ़ी को आवृत्तिया दूसरी की आवृत्तियों से कम से कम $10H_2$ के भंतर से होंगी ।

2. घंटी या सांग

(क) संकेत सीधता

घंटी या सांग या अन्य उपस्कर्ता जिसके ज्वलि लक्षण समान हों, 1 मीटर की दूरी पर 110 dB से अन्यून ज्वलि वाल स्तर का निर्माण करें ।

(झ) सम्निर्माण

घंटी और सांग प्रतिकारक धातु से संलिप्तित हों, और एष्ट ज्वलि वाले आकार के हों । घंटी के भूमि का व्यास, 20 मीटर से अधिक लंबाई के जलयान के लिए 300 मि. मीटर से अव्यतीत हो, और 12 से 29 मीटरों की लंबाई के जलयान के लिए 200 मि. मीटरों से अन्यून हो । जहाँ अव्यतीत हो, शक्तिजालित घंटी निमादक एष्ट, अद्वृद्ध धातु कायम रखने के लिए प्रतिशत है । परंतु सामन्य प्रथालन राष्ट्र हो । निमादक एष्ट का धम घंटी के घन के 3 प्रशतित से कम मही होगा ।

3. अनुमोदन

छानि संकेत उपलब्धिरों का सम्मिलित, जनकी जारी और उनका जलयान पर संत्यापन उस राज्य के जिसका मध्यम करने के लिए जलयान हकबार है, समुचित प्राधिकारियों के समाधान प्रद रूप में होना चाहिए।

उपलब्धि-4

आपातकालीन संकेत

1. निम्न, संयुक्त या विभिन्न रीनि से प्रयुक्त या बाराएं गए संकेत, संकट काल और मदद की आवश्यकता सुविधा करेंगे।

(क) बंदूक या अथवा स्टोटक संकेत सामग्री एक विशेष के प्रव्यावधि से खलाना;

(ख) किसी कोहरा सेतन उपलब्धण से सतत छवि करना;

(ग) रोकेड या रोल से, अथवा मध्यावधि से, एक समय एक इस कम से लाल तारे छोड़ना;

(घ) '(SOS)' संमुच्चय से सम्मिलित "भर्स कोड" में ऐडियो टेलीविंगों या अथवा किसी संकेतन पद्धति द्वारा संकेत देना;

(ङ) "सेविंग" शब्द के उच्चार से सम्मिलित संकेत ऐडियो टेलीविंगों द्वारा देजना;

(च) NC द्वारा सुविधा आपातकाल का अन्तर्राष्ट्रीय कूट संकेत देना;

(ज) संकेत, जिसमें घोकार भंडे के ऊपर या नीचे गोद या गोद के सूखे कुछ भी बस्तु हो, दिखाना;

(झ) जलयान पर ज्वालायं (जैसे जलते ढार, पीणे, तेल वीरे आदि से हो) दिखाना;

(झ) लाल प्रकाश दिखाने वाली रोकेड वैराग्य मशाल या हस्त-चारित मशाल;

(झा) लारंगी रंग का धुआं दिखाने वाला धुआं संकेत;

(झ) घोरे-घोरे और वार-वार घोरों और छुने वाहुओं को ऊपर नीचे करना;

(झ) ऐडियो टेलिग्राफ अलार्म संकेत;

(झ) ऐडियो टेलिकोम अलार्म संकेत;

(झ) ऐडियो बीन—संकेत द्वारा आपातकाली स्थिति बरांक संकेतों का पारेवण।

2. पूर्वोक्त किसी भी संकेत का उपयोग या प्रबोधन, आपातकाल और मदद की आवश्यकता की सूखता देने के प्रयोजन के सिवाय नहीं किया जाएगा। और किसी अथवा संकेतों का उपयोग जिन्हें गलती से पूर्वोक्त कोई संकेत न समझ लिया जाए, करना मना है।

3. संकेतों के अन्तर्राष्ट्रीय कूट काण्डित्य वोत सर्व, तथा जलता नियम पुस्तक के संबंधित घंटों और निम्न संकेतों की ओर ध्यान भाक्षित किया जाना।

(क) नारंगी रंग के फंकवास के दृष्टे पर जारी रंग का घोकार ज्वरुर्ज या अथवा उचित बिठ में से एक (आकाश धारा से वाह्याने के लिए)।

(ख) बाय मार्कर।

[का. नं. एस. इल्यू/३-एम. एस. बार. (८)/८५-एम. ए.]

मुद्रार्पण सिद्धान्त, अपर तत्त्विक

सुचना : मुख्य नियम भारत के राज्यपद के भाग 3 छंट II उप छंट (2)

तारीख 5-7-1975 के पृष्ठ 1820—1845 पर नीबहन और परिवहन मंत्रालय की सरकारी अधिकृतता सं. का. नि. 820 तारीख 23-6-1975 के अन्तर्गत प्रकाशित किए गए थे और बाद में

(1) भारत के राज्यपद के भाग 2-छंट III उपछंट (i) तारीख 4-11-78 के पृष्ठ 2533 पर सरकारी अधिकृतता सं. का. नि. 1317 तारीख 24-10-1978 द्वारा संसोधित किए गए थे।

MINISTRY OF TRANSPORT

(Department of Surface Transport)

(Shipping Wing)

NOTIFICATION

New Delhi, the 29th August, 1986

G.S.R. 1053(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 285 of the Merchant Shipping Act, 1958 (44 of 1958), the Central Government hereby makes the following regulations further to amend the Merchant Shipping (Prevention of Collisions at Sea) Regulations, 1975, namely :—

1. (1) These regulations may be called the Merchant Shipping (Prevention of Collisions at Sea) Amendment Regulations, 1986.

(2) They shall come into force from the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Merchant Shipping (Prevention of Collisions at Sea) Regulations, 1975, for the existing Schedule, the following Schedule shall be substituted, namely :—

SCHEDULE

(See regulation 2)

INTERNATIONAL REGULATIONS FOR PREVENTING COLLISIONS AT SEA, 1972

PART A—GENERAL

Rule 1

Application

(a) These Rules shall apply to all vessels upon the high seas and in all waters connected therewith navigable by sea-going vessels.

(b) Nothing in these Rules shall interfere with the operation of special rules made by an appropriate authority for roadsteads, harbours, rivers, lakes or inland waterways connected with the high seas and navigable by seagoing vessels. Such special rules shall conform as closely as possible to these Rules.

(c) Nothing in these Rules shall interfere with the operation of any special rules made by the Government of any State with respect to additional station or signal lights, shapes or whistle signals for ships of war and vessels proceeding under convoy, or with respect to additional station or signal lights or shapes for fishing vessels engaged in fishing as a fleet. These additional station or signal lights, shapes or whistle signals shall, so far as possible, be such that they cannot be mistaken for any light, shape or signal authorized elsewhere under these Rules."

(d) Traffic separation schemes may be adopted by the Organisation for the purpose of these Rules.

(e) Whenever the Government concerned shall have determined that a vessel of special construction or purpose cannot comply fully with the provisions of any of these rules with respect to the number, position, range or arc of visibility of lights or shapes, as well as to the disposition and characteristics of sound-signalling appliances, without interfering with the special function of the vessel, such vessel shall comply with such other provisions in regard to the number, position, range or arc of visibility of lights or shapes, as well as to the disposition and characteristics of sound-signalling appliances, as per government shall have determined to be the closest possible compliance with these rules in respect to that vessel.

Rule 2

Responsibility

(a) Nothing in these Rules shall exonerate any vessel or the owner, master or crew thereof, from the consequences of any neglect to comply with these Rules or of the neglect of any precaution which may be required by the ordinary practice of seamen, or by the special circumstances of the case.

(b) In the construing and complying with these Rules due regard shall be had to all dangers of navigation and collision and to any special circumstances, including the limitations of the vessels involved which may make a departure from these rules necessary to avoid immediate danger.

Rule 3

General Definitions

For the purpose of these Rules except where the context otherwise requires :

(a) The word "vessel" includes every description of water craft, including non-displacement craft and seaplanes, used or capable of being used as a means of transportation on water.

(b) The term "power-driven vessel" means any vessel propelled by machinery.

(c) The term "sailing vessel" means any vessel under sail provided that propelling machinery, if fitted, is not being used.

(d) The term "vessel engaged in fishing" means any vessel fishing with nets, lines, trawls or other fishing apparatus which restrict manoeuvrability, but does not include a vessel fishing with trolling lines or other fishing apparatus which do not restrict manoeuvrability.

(e) The word "seaplane" includes any aircraft designed to manoeuvre on the water.

(f) The term "vessel not under command" means a vessel which through some exceptional circumstances is unable to manoeuvre as required by these Rules and is therefore unable to keep out of the way of another vessel.

(g) The term "vessel restricted in her ability to manoeuvre" means a vessel which from the nature of her work is restricted in her ability to manoeuvre as required by these Rules and is therefore unable to keep out of the way of another vessel.

"The term "vessels restricted in their ability to manoeuvre" shall include but not be limited to :

(i) a vessel engaged in laying, servicing or picking up a navigation mark, submarine cable or pipeline;

(ii) a vessel engaged in dredging, surveying or under water operations;

(iii) a vessel engaged in replenishment or transferring persons, provisions or cargo while underway;

(iv) a vessel engaged in the launching or recovery of aircraft;

(v) a vessel engaged in mine clearance operations;

(vi) a vessel engaged in a towing operation such as renders her unable to deviate from her course.

(h) The term "vessel constrained by her draught" means a power-driven vessel which because of her draught in relation to the available depth of water is severely restricted in her ability to deviate from the course she is following.

(i) The word "underway" means that a vessel is not at anchor or made fast to the shore, or a ground.

(j) The words "length" and "breadth" of a vessel means her length overall and greatest breadth.

(k) Vessels shall be deemed to be in sight of one another only when one can be observed visually from the other.

(l) The term "restricted visibility" means any condition in which visibility is restricted by fog, mist falling snow, heavy rainstorms, sandstorms or any other similar causes.

PART B—STEERING AND SAILING RULES
Section I—conduct of vessels in any condition of Visibility.

Rule 4**Application**

Rules in this Section apply in any condition of visibility.

Rule 5**Look-out**

Every vessel shall at all times maintain a proper look-out by sight and hearing as well as by all available means appropriate in the preventing circumstances and conditions so as to make a full appraisal of the situation and of the risk of collision.

Rule 6**Safe Speed**

Every vessel shall at all times proceed at a safe speed so that she can take proper and effective action to avoid collision and be stopped within a distance appropriate to the prevailing circumstances and conditions.

In determining a safe speed the following factors shall be among those taken into account :

(a) By all vessels :

- (i) the state of visibility ;
- (ii) the traffic density including concentrations of fishing vessels or any other vessels ;
- (iii) the manœuvrability of the vessel with special reference to stopping distance and turning ability in the prevailing conditions ;
- (iv) at night the presence of background light such as from shore lights or from back scatter of her own lights ;
- (v) the state of wind, sea and current, and the proximity of navigational hazards ;
- (vi) the draught in relation to the available depth of water.

(b) Additionally, by vessels with operational radar :

- (i) the characteristics, efficiency and limitations of the radar equipment ;
- (ii) any constraints imposed by the radar range scale in use ;
- (iii) the effect on radar detection of the sea state, weather and other sources of interference ;
- (iv) the possibility that small vessels, ice and other floating objects may not be detected by radar at an adequate range ;
- (v) the number, location and movement of vessels detected by radar ;
- (vi) the more exact assessment of the visibility that may be possible when radar is used to determine the range of vessels or other objects in the vicinity.

Rule 7**Risk of Collision**

(a) Every vessel shall use all available means appropriate to the prevailing circumstances and conditions to determine if risk of collision exists if there is any doubt such risk shall be deemed to exist.

(b) Proper use shall be made of radar equipment if fitted and operational, including long-range scanning to obtain early warning of risk of collision and radar plotting or equivalent systematic observation of detected objects.

(c) Assumption shall not be made on the basis of scanty information, especially scanty radar information.

(d) In determining if risk of collision exists the following considerations shall be among those taken into account :

- (i) such risk shall be deemed to exist if the compass bearing of an approaching vessel does not appreciably change ;
- (ii) such risk may sometimes exist even when an appreciable bearing change is evident, particularly when approaching a very large vessel or a tow or when approaching a vessel at close range.

Rule 8**Action to avoid collision**

(a) Any action taken to avoid collision shall, if the circumstances of the case admit, be positive, made in ample time and with due regard to the observance of good seamanship.

(b) Any alteration of course or speed to avoid collision shall, if the circumstances of the case admit, be large enough to be readily apparent to another vessel observing visually or by radar; a succession of small alterations of course and/or speed should be avoided.

(c) If there is sufficient sea room, alteration of course alone may be the most effective action to avoid a close-quarters situation provided that it is made in good time, is substantial and does not result in another close-quarters situation.

(d) Action taken to avoid collision with another vessel shall be such as to result in passing at a safe distance. The effectiveness of the action shall be carefully checked until the other vessel is finally past and clear.

(e) If necessary to avoid collision or allow more time to assess the situation, a vessel shall slacken her speed or take all way off by stopping or reversing her means of propulsion.

Rule 9**Narrow channels**

(a) A vessel proceeding along the course of a narrow channel or fairway shall keep as near to the outer limit of the channel or fairway which lies on her starboard side as is safe and practicable.

(b) A vessel of less than 20 metres in length or a sailing vessel shall not impede the passage of a vessel which can safely navigate only within a narrow channel or fairway.

(c) A vessel engaged in fishing shall not impede the passage of any other vessel navigating within a narrow channel or fairway.

(d) A vessel shall not cross a narrow channel or fairway if such crossing impedes the passage of a vessel which can safely navigate only within such channel or fairway. The latter vessel may use the sound signal prescribed in Rule 34(d) if in doubt as to the intention of the crossing vessel.

(e) (i) In a narrow channel or fairway when overtaking can take place only if the vessel to be overtaken has to take action to permit safe passing the vessel intending to overtake shall indicate her intention by sounding the appropriate signal prescribed in Rule 34(c)(i). The vessel to be overtaken shall, if in agreement, sound the appropriate signal prescribed in Rule 34(c)(ii) and take steps to permit safe passing. If in doubt she may sound the signals prescribed in Rule 34(d).

(ii) This Rule does not relieve the overtaking vessel of her obligation under Rule 13.

(f) A vessel nearing a bend or an area of a narrow channel or fairway where other vessels may be obscured by an intervening obstruction shall navigate with particular alertness and caution and shall sound the appropriate signal prescribed in Rule 34(e).

(g) Any vessel shall, if the circumstances, of the case admit, avoid anchoring in a narrow channel.

Rule 10

Traffic separation schemes

(a) This Rule applies to traffic separations schemes adopted by the Organisation.

(b) A vessel using a traffic separation scheme shall :

- (i) proceed in the appropriate traffic lane in the general direction of traffic flow for that lane;
- (ii) so far as practicable keep clear of a traffic separation line or separation zone;
- (iii) normally join or leave a traffic lane at the termination of the lane, but shall do so at as small an angle to the general direction of traffic flow, as practicable.

(c) A vessel shall so far as practicable avoid crossing traffic lanes, but if obliged to do so shall cross as nearly as practicable at right angles to the general direction of traffic flow.

(d) In-shore traffic zones shall not normally be used by through traffic which can safely use the appropriate traffic lane within the adjacent traffic separation scheme. However, vessels of less than 20 metres in length and sailing vessels may under all circumstances use inshore traffic zones.

(e) A vessel other than a crossing vessel or a vessel joining or leaving a lane shall not normally enter a separation zone or cross a separation line except :

- (i) in cases of emergency to avoid immediate danger;
- (ii) to engage in fishing within a separation zone.

(f) A vessel navigating in areas near the terminations of traffic separation schemes shall do so with particular caution.

(g) A vessel shall so far as practicable avoid anchoring in a traffic separation scheme or in areas near its terminations.

(h) A vessel not using a traffic separation scheme shall avoid it by as wide a margin as is practicable.

(i) A vessel engaged in fishing shall not impede or a sailing vessel shall not impede the safe passage of a power-driven vessel following a traffic lane.

(k) A vessel restricted in her ability to manoeuvre when engaged in an operation for the maintenance of safety of navigation in a traffic separation scheme is exempted from complying with this Rule to the extent necessary to carry out the operation.

(l) A vessel restricted in her ability to manoeuvre when engaged in an operation for the laying, servicing or picking up of a submarine cable, within a traffic separation scheme, is exempted from complying with this Rule to the extent necessary to carry out the operation.

SECTION II—CONDUCT OF VESSELS IN SIGHT OF ONE ANOTHER

Rule 11

Application

Rules in this Section apply to vessels in sight of one another.

Rule 12

Sailing vessels

(a) When two sailing vessels are approaching one another so as to involve risk of collision, one of them shall keep out of the way of the other as follows :

- (i) When each has the wind on a different side, the vessel which has the wind on the port side shall keep out of the way of the other;
- (ii) when both have the wind on the same side, the vessel which is to windward shall keep out of the way of the vessel which is to leeward;
- (iii) if a vessel with the wind on the port side sees a vessel to windward and cannot determine with certainty whether the other vessel has the wind on the port or on the starboard side, she shall keep out of the way of the other.

(b) For the purposes of the Rule the windward side shall be deemed to be the side opposite to that on which the mainsail is carried or, in the case of square-rigged vessel, the side opposite to that on which the largest fore-and-aft sail is carried.

Rule 13 Overtaking

(a) Notwithstanding anything contained in the Rules of Part B, Sections I and II, any vessel overtaking any other shall keep out of the way of the vessel being overtaken.

(b) A vessel shall be deemed to be overtaking when coming up with another vessel from a direction more than 22.5 degrees abaft her beam, that is in such a position with reference to the vessel she is overtaking, that at night she would be able to see only the sternlight of that vessel, but neither of her sidelights.

(c) When a vessel is in any doubt as to whether she is overtaking another, she shall assume that this is the case and act accordingly.

(d) Any subsequent alteration of the bearing between the two vessels shall not make the overtaking vessel a crossing vessel within the meaning of these Rules or relieve her of the duty of keeping clear of the overtaken vessel until she is finally past and clear.

Rule 14

Head-on situation

(a) When two power-driven vessels are meeting on reciprocal or nearly reciprocal courses so as to involve risk of collision each shall alter her course to starboard so that each shall pass on the portside of the other.

(b) Such a situation shall be deemed to exist when a vessel sees the other ahead or nearly ahead and by night she could see the masthead lights of the other in a line or nearly in a line and/or both sidelights and by day she observes the corresponding aspect of the other vessel.

(c) When a vessel is in any doubt as to whether such a situation exists she shall assume that it does exist and act accordingly.

Rule 15 Crossing situation

When two power-driven vessels are crossing so as to involve risk of collision, the vessel which has the other on her own starboard side shall keep out of the way and shall, if the circumstances of the case admit, avoid crossing ahead of the other vessel.

Rule 16

Action by give-way vessel

Every vessel which is directed by these Rules to keep out of the way of another vessel shall so far as possible, take early and substantial action to keep well clear.

Rule 17

Action by stand-on vessel

(a) (i) Whereby any of these Rules one of two vessels is to keep out of the way the other shall keep her course and speed.

(ii) The latter vessel may however take action to avoid collision by her manoeuvre alone, as soon as it becomes apparent to her that the vessel required to keep out of the way is not taking appropriate action in compliance with these Rules.

(b) When, from any cause, the vessel required to keep her course and speed finds herself so close that collision cannot be avoided by the action of the give-way vessel alone, she shall take such action as will best aid to avoid collision.

(c) A power-driven vessel which takes action in a crossing situation in accordance with sub-paragraph (a) (ii) of this Rule to avoid collision with another power-driven vessel shall, if the circumstances of the case admit, not alter course to port for a vessel on her own port side.

(d) This Rule does not relieve the give-way vessel of her obligation to keep out of the way.

Rule 13

Responsibilities between vessels

Except where Rules, 9, 10, and 13 otherwise require :

(a) A power-driven vessel underway shall keep out of the way of :

- (i) a vessel not under command ;
- (ii) a vessel restricted in her ability to manoeuvre ;
- (iii) a vessel engaged in fishing ;
- (iv) a sailing vessel.

(b) A sailing vessel under way shall keep out of the way of :

- (i) a vessel not under command ;
- (ii) a vessel restricted in her ability to manoeuvre ;
- (iii) a vessel engaged in fishing ;

(c) A vessel engaged in fishing when underway shall, so far as possible, keep out of the way of :

- (i) a vessel not under command ;
- (ii) a vessel restricted in her ability to manoeuvre ;

(d) (i) Any vessel other than a vessel not under command or a vessel restricted in her ability to manoeuvre shall, if the circumstances of the case admit, avoid impeding the safe passage of a vessel constrained by her draught, exhibiting the signals in Rule 28.

- (ii) A vessel constrained by her draught shall navigate with particular caution having full regard to her special condition.

(e) A seaplane on the water shall, in general, keep well clear of all vessels and avoid impeding their navigation. In circumstances, however, where risk of collision exists she shall comply with the Rules of this Part.

SECTION III—CONDUCT OF VESSELS IN RESTRICTED VISIBILITY

Rule 19

Conduct of vessels in restricted visibility.

(a) This rule applies to vessels not in sight of one another when navigating in or near an area of restricted visibility.

(b) Every vessel shall proceed at a safe speed adopted to the prevailing circumstances and conditions of restricted visibility. A power-driven vessel shall have her engines ready for immediate manoeuvre.

(c) Every vessel shall have due regard to the prevailing circumstances and conditions of restricted visibility when complying with the Rules of Section I of this Part.

(d) A vessel which detects by radar alone the presence of another vessel shall determine if a close-quarters situation is developing and/or risk of collision exists. If so, she shall take avoiding action in ample time, provided that when such action consists of an alteration of course, so far as possible the following shall be avoided :

- (i) an alteration of course to port for a vessel forward of the beam, other than for a vessel being overtaken ;
- (ii) an alteration of course towards a vessel a beam or abaft the beam.

(e) Except where it has been determined that risk of collision does not exist, every vessel which hears apparently forward of her beam the fog signal of another vessel, or which cannot avoid a close-quarters situation with another vessel forward of her beam, shall reduce her speed to the minimum at which she can be kept on her course. She shall if necessary take all her way off and in any event navigate with extreme caution until danger of collision is over.

PART C—LIGHTS AND SHAPES

Rule 20

Application

(a) Rules in this Part shall be complied within all weathers.

(b) The Rules concerning lights shall be complied with from sunset to sunrise, and during such times no other lights shall be exhibited, except such lights as cannot be mistaken for the lights specified in these Rules or do not impair their visibility or distinctive character, or interfere with the keeping of a proper look-out.

(c) The lights prescribed by these Rules shall, if carried, also be exhibited from sunrise to sunset in restricted visibility and may be exhibited in all other circumstances when it is deemed necessary.

(d) The Rules concerning shapes shall be complied with by day.

(e) The lights and shapes specified in these Rules shall comply with the provisions of Annexure I to these Regulations.

Rule 21

Definitions

(a) "Masthead light" means a white light placed over the fore and aft centreline of the vessel showing an unbroken light over an arc of the horizon of 225 degrees and so fixed as to show the light from right ahead to 22.5 degrees about the beam on either side of the vessel.

(d) "Sidelights" means a green light on the starboard side and a red light on the port side each showing an unbroken light over an arc of the horizon of 112.5 degrees and so fixed as to show the light from right ahead to 22.5 degrees abaft the beam on its respective side. In a vessel of less than 20 metres in length the sidelights may be combined in one lantern carried on the fore and aft centreline of the vessel.

(c) "Sternlight" means a white light placed as nearly as practicable at the stern showing an unbroken light over an arc of the horizon of 67.5 degrees from right astern on each side of the vessel.

(d) "Towing light" means a yellow light having the same characteristics as the "sternlight" defined in paragraph (c) of this Rule.

(e) "All round light" means a light showing an unbroken light over an arc of the horizon of 360 degrees.

(f) "Flashing light" means a light flashing at regular intervals at a frequency of 120 flashes or more per minute.

Rule 22

Visibility of Lights

The lights prescribed in these Rules shall have an intensity as specified in Section 8 of Annex I to these Regulations so as to be visible at the following minimum ranges :

(a) In vessels of 50 metres or more in length :

- a masthead light, 6 miles ;
- a sidelight, 3 miles ;
- a sternlight, 3 miles ;
- a towing light, 3 miles ;

(b) In vessels of 12 metres or more in length but less than 50 metres in length :

- a masthead light, 5 miles ; except that where the length of the vessel is less than 20 metres ; 3 miles ;
- a side light, 2 miles ;
- a sternlight, 2 miles ;
- a towing light, 2 miles ;
- a white, red, green or yellow all-round light, 2 miles.

- (c) In vessels of less than 12 metres in length :
- a masthead light, 2 miles ;
 - a side light, 1 mile ;
 - a sternlight, 2 miles ;
 - a towing light, 2 miles ;
 - a white, red, green or yellow all-round light, 2 miles.
- (d) In inconspicuous, partly submerged vessels or objects being towed :
- a white all-round light, 3 miles".

Rule 23

Power-driven vessels underway

- (a) A power-driven vessel underway shall exhibit :
- (i) a masthead light ;
 - (ii) a second masthead light abaft of and higher than the forward one ; except that a vessel of less than 50 metres in length shall not be obliged to exhibit such light but may do so ;
 - (iii) Side lights ;
 - (iv) a sternlight.
- (b) An air-cushion vessel when operating in the non-displacement mode shall, in addition to the lights prescribed in paragraph (a) of this Rule, exhibit an all-round flashing yellow lights.
- (c) (i) A power-driven vessel of less than 12 metres in length may in lieu of the lights prescribed in paragraph (a) of this Rule exceed 7 knots may in lieu of the lights lights ;
- (ii) a power-driven vessel of less than 7 metres in length whose maximum speed does not exceed 7 knots may in lieu of the lights prescribed in paragraph (a) of this Rule exhibit an all round white light and shall, if practicable, also exhibit sidelights ;
- (iii) the masthead light or all-round white light on a power-driven vessel of less than 12 metres in length may be displaced from the fore and aft centreline of the vessel if centreline fitting is not practicable, provided that the sidelights are combined in one lantern which shall be carried on the fore and aft centreline of the vessel or located as nearly as practicable in the same fore and aft line as the masthead light or the all-round white light.

Rule 24

Towing and pushing

- (a) A power-driven vessel when towing shall exhibit :
- (i) instead of the light prescribed in Rule 23(a) (i) or (a)(ii), two masthead lights in a vertical line. When the length of the two measuring from the stern of the towing vessel
 - to the after end of the tow exceeds 200 metres ; three such lights in a vertical line ;
 - (ii) sidelights ;
 - (iii) a sternlight ;
 - (iv) a towing light in a vertical line above the sternlight ;
 - (v) when the length of the tow exceeds 200 metres, a diamond shape, where it can best be seen.
- (b) When a pushing vessel and a vessel being pushed ahead are rigidly connected in a composite unit they shall be regarded as a power-driven vessel and exhibit the lights prescribed in Rule 23.
- (c) A power-driven vessel when pushing ahead or towing alongside, except in the case of a composite unit, shall exhibit :
- (i) instead of the light prescribed in Rule 23 (a)(i), two masthead lights forward in a vertical line ;
 - (ii) side lights ;
 - (iii) a stern light.
- (d) A power-driven vessel to which paragraph (a) or (c) of this Rule apply shall also comply with Rule 23(a)(ii).
- (e) A vessel or object being towed, other than those mentioned in paragraph (g) of this Rule, shall exhibit :
- (i) sidelight ;
 - (ii) a sternlight ;
 - (iii) when the length of the tow exceeds 200 metres, a diamond shape where it can best be seen.
- (f) Provided that any number of vessels being towed or pushed in a group shall be lighted as one vessel,
- (i) a vessel being pushed ahead, not being part of a composite unit, shall exhibit at the forward end, sidelights ;
 - (ii) a vessel being towed alongside shall exhibit a sternlight and at the forward end, sidelights.
- (g) An inconspicuous, partly submerged vessel or object, or combination of such vessels or objects being towed, shall exhibit :
- (i) if it is less than 25 metres in breadth, one all-round white light at or near the forward end and one at or near the after end except that dracones need not exhibit a light at or near the forward end ;
 - (ii) if it is 25 metres or more in breadth, two additional all-round white light at or near the extremities of its breadth ;
 - (iii) if it exceeds 100 metres in length, additional all-round white lights between the lights prescribed in sub-paragraphs (i) and (ii) so

that the distance between the lights prescribed in sub-paragraphs (i) and (ii) so that the distance between the lights shall not exceed 100 metres;

(iv) a diamond shape at or near the aftermost extremity of the last vessel or object being towed and if the length of the tow exceeds 200 metres an additional diamond shape where it can best be seen and located as far forward as is practicable."

(h) Where from any sufficient cause it is impracticable for a vessel or object being towed to exhibit the lights or shapes prescribed in paragraph (e) or (g) of this rule, all possible measures shall be taken to light the vessel or object towed or at least to indicate the presence of such vessel or object."

(i) Where from any sufficient cause it is impracticable for a vessel not normally engaged in towing operations to display the lights prescribed in paragraph (a) or (c) of this Rule, such vessel shall not be required to exhibit those lights when engaged in towing another vessel in distress or otherwise in need of assistance. All possible measures shall be taken to indicate the nature of the relationship between the towing vessel and the vessel being towed as authorised by Rule 36, in particular by illuminating the towline."

Rule 25

Sailing, vessels underway and vessels under oars

(a) A sailing vessel underway shall exhibit :

- (i) sidelights ;
- (ii) a sternlight.

(b) In a sailing vessel of less than 22 metres in length the lights prescribed in paragraph (a) of this Rule may be combined in one lantern at or near the top of the mast where it can best be seen.

(c) A sailing vessel underway may, in addition to the lights prescribed in paragraph (a) of this Rule, exhibit at or near the top of the mast, where they can best be seen, two all roundlights in a vertical line, the upper being red and the lower green, but these lights shall not be exhibited in conjunction with combined lantern permitted by paragraph (b) of this Rule.

(d) (i) A sailing vessel of less than 7 metres in length shall, if practicable, exhibit the lights prescribed in paragraph (a) or (b) of this Rule, but if she does not, she shall have ready at hand an electric torch or lighted lantern showing a white light which shall be exhibited in sufficient time to prevent collision.

(ii) A vessel under oars may exhibit the lights prescribed in this Rule for sailing vessels, but if she does not she shall have ready at hand an electric torch or lighted lantern showing a white light which shall be exhibited in sufficient time to prevent collision.

(e) A vessel proceeding under sail when also being propelled by machinery shall exhibit forward where it can best be seen a conical shape, apex downwards.

Rule 26

Fishing Vessels

(a) A vessel engaged in fishing, whether underway or at anchor, shall exhibit only the lights and shapes prescribed in this Rule

(b) A vessel when engaged in trawling, by which is meant the dragging through the water of a dredge net or other apparatus used as a fishing appliances, shall exhibit :

- (i) two all-round lights in a vertical line, the upper being green and the lower white, or a shape consisting of two cones with their apexes together in a vertical line one above the other; a vessel of less than 20 metres in length may instead of this shape exhibit a basket ;
- (ii) a masthead light abaft of and higher than the all-round green light; a vessel of less than 50 metres in length shall not be obliged to exhibit such a light but may do so ;
- (iii) when making way through the water, in addition to the lights prescribed in this paragraph, sidelights and a sternlight.

(c) A vessel engaged in fishing, other than trawling, shall exhibit :

- (i) two all-round lights in a vertical line, the upper being red and the lower white, or a shape consisting of two cones with apexes together in a vertical line one above the other; a vessel of less than 20 metres in length may instead of this shape exhibit a basket ;
- (ii) when there is outlying gear extending more than 150 metres horizontally from the vessel, an all-round white light or a cone apex upwards in the direction of the gear ;
- (iii) when making way through the water, in addition to the lights prescribed in this paragraph, sidelights and a sternlight.

(d) A vessel engaged in fishing in close proximity to other vessels may exhibit the additional signals described in Annex II to these Regulations.

(e) A vessel when not engaged in fishing shall not exhibit the light or shapes prescribed in this Rule but only those prescribed for a vessel of her length.

Rule 27

Vessels not under command or restricted in their ability to manoeuvre

(a) A vessel not under command shall exhibit :

- (i) two all-round red lights in a vertical line where they can best be seen ;
- (ii) two balls or similar in shapes in a vertical line where they can best be seen.
- (iii) when making way through the water in addition to the lights prescribed in this paragraph, sidelights and a sternlight.

(b) A vessel restricted in her ability to manoeuvre, except a vessel engaged in mineclearance operations, shall exhibit :

- (i) three all-round lights in a vertical line where they can best be seen. The highest and lowest of these lights shall be red and the middle light shall be white;
- (ii) three shapes in a vertical line where they can best be seen. The highest and lowest of these shapes shall be balls and the middle one a diamond;
- (iii) when making way through the water, a masthead light or lights, sidelights and a sternlight, in addition to the lights prescribed in sub-paragraph (i),
- (iv) when at anchor, in addition to the lights or shapes prescribed in sub-paragraphs (i) and (ii), the light, lights or shape prescribed in Rule 30.

(c) A power-driven vessel engaged in a towing operation such as severely restricts the towing vessel and her tow in their ability to deviate from their course shall, in addition to the lights or shapes prescribed in Rule 24(a), exhibit the lights or shapes prescribed in sub-paragraphs (b)(i) and (ii) of this Rule.

(d) A vessel engaged in dredging or underwater operations when restricted in her ability to manoeuvre, shall exhibit the lights and shapes prescribed in sub-paragraphs (b)(i), (ii) and (iii); of this Rule and shall in addition, when an obstruction exists, exhibit :

- (i) two all-round red lights or two balls in a vertical line to indicate the side on which the obstruction exists;
- (ii) two all-round green light or two diamonds in a vertical line to indicate the side on which another vessel may pass;
- (iii) when at anchor, the lights or shapes prescribed in this paragraph instead of the lights or shapes prescribed in Rule 30.

(e) Whenever the size of a vessel engaged in diving operations makes it impracticable to exhibit all lights and shapes prescribed in paragraph (d) of this Rule, the following shall be exhibited :

- (i) three all-round lights in a vertical line where they can best be seen. The highest and lowest of these lights shall be red and the middle light shall be white;
- (ii) a rigid replica of the International Code flag "A" not less than 1 metre in height. Measures shall be taken to ensure its all-round visibility.

(f) A vessel engaged in mineclearance operations shall in addition to the lights prescribed for a power-driven vessel in Rule 23 or to the lights or shapes prescribed for a vessel at anchor in Rule 30 as appropriate, exhibit three all-round green lights or three balls. One of these lights or shapes shall be exhibited near the foremost head and one at each end of the fore yard. These lights or shapes indicate

that it is dangerous for another vessel to approach within 1000 metres of the mineclearance vessel.

(g) Vessels of less than 12 metres in length, except those engaged in diving operations, shall not be required to exhibit the lights and shapes prescribed in this Rule.

(h) The signals prescribed in this Rule are not signals of vessels in distress and requiring assistance. Such signals are contained in Annex IV to these Regulations.

Rule 28

Vessels constrained by their draught

A vessel constrained by her draught may, in addition to the lights prescribed for power-driven vessels in Rule 23, exhibit where they can best be seen three all-round red lights in a vertical line, or a cylinder.

Rule 29

Pilot Vessels

(a) A vessel engaged on pilotage duty shall exhibit :

- (i) at or near the masthead, two all-round lights in a vertical line, the upper being white and the lower red;
- (ii) when underway in addition, sidelights and a sternlight;
- (iii) when at anchor, in addition to the lights prescribed in sub-paragraph (i), the light, lights or shape prescribed in Rule 30 for vessels at anchor.

(b) A pilot vessel when not engaged on pilotage duty shall exhibit the lights or shapes prescribed for a similar vessel of her length

Rule 30

Anchored vessels and vessels around

(a) A vessel at anchor shall exhibit where it can best be seen :

- (i) in the fore part, an all-round white light or one ball;
- (ii) at or near the stern and at a lower level than the light prescribed in sub-paragraph (i), an all-round white light.

(b) A vessel of less than 50 metres in length may exhibit an all-round white light where it can best be seen instead of the lights prescribed in paragraph (a) of this Rule.

(c) A vessel of anchor may and a vessel of 100 metres and more in length shall, also use the available working or equivalent lights to illuminate her decks.

(d) A vessel aground shall exhibit the lights prescribed in paragraph (a) or (b) of this Rule and in addition, where they can best be seen :

- (i) two all-round red lights in a vertical line;
- (ii) three balls in a vertical line.

(e) A vessel of less than 7 metres in length, when at anchor, not in or near a narrow channel, fairway or anchorage, or where other vessel normally navigate, shall not be required to exhibit the lights or shapes prescribed in paragraphs (a) and (b) of this Rule.

(f) A vessel of less than 12 metres in length, when around, shall not be required to exhibit the lights or shapes prescribed in sub-paragraphs (d) (i) and (ii) of this Rule.

Rule 31

Seaplanes

Where it is impracticable for a seaplane to exhibit lights and shapes of the characteristics or in the positions prescribed in the Rules of this Part she shall exhibit lights and shapes as closely similar in characteristics and position as is possible.

PART D—SOUND AND LIGHT SIGNALS

Rule 32

Definitions

(a) The word "whistle" means any sound signalling appliances capable of producing the prescribed blasts and which complies with the specifications in Annexure III to these Regulations.

(b) The term "short blast" means a blast of about one second's duration.

(c) The term "prolonged blast" means a blast of from four to six second's duration.

Rule 33

Equipment for sound signals

(a) A vessel of 12 metres or more in length shall be provided with a whistle and a bell and a vessel of 100 metres or more in length shall, in addition, be provided with a gong the tone and sound of which cannot be confused with that of the bell. The whistle, bell and gong shall comply with the specifications in Annexure III to these Regulations. The bell or gong or both may be replaced by other equipment having the same respective sound characteristics, provided that manual sounding of the prescribed signals shall always be possible.

(b) A vessel of less than 12 metres in length shall not be obliged to carry the sound signalling appliances prescribed in paragraph (a) of this Rule but if she does not, she shall be provided with some other means of making an efficient sound signal.

Rule 34

Manoeuvring and warning signals

(a) When vessels are in sight of one another, a power driven vessel underway, when manoeuvring as authorised or required by these Rules shall indicate that manoeuvre by the following signals on her whistle :

- one short blast to mean "I am altering my course to starboard;"

- two short blasts to mean "I am altering my course to port;"
- three short blasts to mean "I am operating astern propulsion".

(b) Any vessel may supplement the whistle signals prescribed in paragraph (a) of this Rule by light signals, repeated as appropriate, whilst the manoeuvre is being carried out;

(i) these light signals shall have the following significance :

- one flash to mean "I am altering my course to starboard;"
- two flashes to mean "I am altering my course to Port;"
- three flashes to mean "I am operating astern propulsion".

(ii) the duration of each flash be about the second, the interval between flashes shall be about one second, and the interval between successive signals shall be not less than ten second:

(iii) the light used for this signal shall, if fitted, be an all-round white light, visible at a minimum range of 5 miles, and shall comply with the provisions of Annex I to these Regulations.

(c) When in sight of one another in narrow channel or fairways :

(i) a vessel intending to overtake another shall in compliance with Rule 9(e)(i) indicate her intention by the following signals on her whistle :

- two prolonged blasts followed by one short blast to mean "I intend to overtake you on your starboard side;"
- two prolonged blasts followed by two short blast to mean "I intend to overtake you on your port side".

(ii) the vessel about to be overtaken when acting in accordance with Rule 9(e)(i) shall indicate her agreement by the following signal on her whistle :

- one prolonged, one short, one prolonged and one short blast, in that order.

(d) When vessels in sight of one another are approaching each other and from any cause either vessel fails to understand the intentions or actions of the other, or is in doubt whether sufficient action is being taken by the other to avoid collision the vessel in doubt shall immediately indicate such doubt by giving at least five short and rapid blasts on the whistle. Such signal may be supplemented by a light signal of at least five short and rapid flashes.

(e) A vessel nearing a bend or an area of a channel or fairway where other vessels may be obscured by an intervening obstruction shall sound one prolonged blast. Such signal shall be answered with a prolonged blast by any approaching vessel that may be within hearing around the bend or behind the intervening obstruction.

(f) If whistles are fitted on a vessel at a distance apart of more than 100 metres, one whistle only shall be used for giving manoeuvring and warning signals

Rule 35

Sound signals in restricted visibility

In or near an area of restricted visibility, whether by day or night, the signals prescribed in this Rule shall be used as follows :

(a) A power-driven vessel making way through the water shall sound at intervals of not more than 2 minutes one prolonged blast.

(b) A power-driven vessel underway but stopped and making no way through the water shall sound at intervals of not more than 2 minutes two prolonged blasts in succession with an interval of about 2 seconds between them.

(c) A vessel not under command, a vessel restricted in her ability to manoeuvre, a vessel constrained by her draught a sailing vessel, a vessel engaged in fishing and a vessel engaged in towing or pushing another vessel shall, instead of the signals prescribed in paragraphs (a) or (b) of this Rule sound at intervals of not more than 2 minutes three blasts in succession, namely one prolonged followed by two short blast.

(d) A vessel engaged in fishing, when at anchor, and a vessel restricted in her ability to manoeuvre when carrying out her work at anchor, shall instead of the signals prescribed in paragraph (g) of this Rule sound the signal prescribed in paragraph (c) of this Rule".

(e) A vessel towed or if more than one vessel is towed the last vessel of the tow if manned, shall at intervals of not more than 2 minutes sound four blasts in succession, namely one prolonged followed by three short blasts. When practicable, this signal shall be made immediately after the signal made by the towing vessel.

(f) When a pushing vessel and a vessel being pushed ahead are rigidly connected in a composite unit they shall be regarded as a power-driven vessel and shall give the signals prescribed in paragraphs (a) or (b) of this Rule

(g) A vessel of anchor shall at intervals of not more than one minute ring the bell rapidly for about 5 seconds. In a vessel of 100 metres or more in length the bell shall be sounded in the forepart of the vessel and immediately after the ringing of the bell the gong shall be sounded rapidly for about 5 seconds in the after part of the vessel. A vessel at anchor may in addition sound three blasts in succession, namely one short one prolonged and one short blast, to give warning of her position and of the possibility of collision to an approaching vessel.

(h) A vessel aground shall give the bell signal and if required the gong signal prescribed in paragraph (f) of this Rule and shall, in addition, give three separate and distinct strokes on the bell immediately before and after the rapid ringing of the bell. A vessel

aground may in addition sound an appropriate whistle signal.

(i) A vessel of less than 12 metres in length shall not obliged to give the above-mentioned signals but, if she does not, shall make some other efficient sound signal intervals of not more than 2 minutes.

(j) A pilot vessel when engaged on pilotage duty may in addition to the signals prescribed in paragraphs (a), (b) or (f) of this Rule sound an identity signals consisting of four short blasts:

Rule 36

Signal to attract attention

If necessary to attract the attention of another vessel any vessel may make light or sound that cannot be mistaken for any signal authorised elsewhere in these Rules, or may direct the beam of her search-light in the direction of the danger in such a way as not to embrace any vessel. Any light to attract the attention of another vessel shall be such that it cannot be mistaken for any aid to navigation. For the purpose of this Rule the use of high intensity intermittent or revolving lights, such as strobe lights, shall be avoided.

Rule 37

Distress signals

When a vessel is in distress and requires assistance she shall use or exhibit the signals described in Annexure IV to these Regulations.

PART E—EXEMPTIONS

Rule 38

Exemptions

Any vessel (for class of vessels) provided that she complies with the requirements of the International Regulations for Preventing Collisions at Sea, 1960, the keel of which is laid or which is at a corresponding stage of construction before the entry into force of these Regulations may be exempted from compliance therewith as follows:

(a) The installation of lights with ranges prescribed in Rule 22, until four years after the date of entry into force of these Regulations.

(b) The installations of lights with colour specifications as prescribed in Section 7 of Annexure I to these Regulations, until four years after the date of entry into force of these Regulations.

(c) The repositioning of lights as a result of conversion from Imperial to metric units and rounding off measurement figures, permanent exemption.

(d) (i) The repositioning of masthead lights on vessel of less than 150 metres in length, resulting from the prescriptions of section 3(a) of Annex I to these Regulations permanent exemption.

(ii) The repositioning of masthead lights on vessel of 150 metres or more in length, resulting from the prescriptions of Section 3(a) of Annexure I to these

Regulations, until nine years after the date of entry into force of these Regulations.

(e) The repositioning of masthead lights resulting from the prescriptions of Section 2(b) of Annex I to these Regulations, until nine years after the date of entry into force of these Regulations.

(f) The repositioning of sidelights resulting from the prescriptions of Section 3(b) of Annex I to these Regulations, until nine years after the date of entry into force of these Regulations.

(g) The requirements for sound signals appliances prescribed in Annex III to these Regulations, until nine years after the date of entry into force of these Regulations.

(h) The repositioning of all-round lights resulting from the prescription of section 9(b) of Annex I to these Regulations, permanent exemption.

ANNEX-I

Positioning and Technical Details of Lights and Shapes.

1. Definition—The term "height above the hull" means height above the uppermost continuous deck. This height shall be measured from the position vertically beneath the location of the light.

2. Vertical positioning and spacing of lights,

(a) On a power driven vessel of 20 metres or more in length the masthead lights shall be placed as follows:

(i) The forward masthead light, or if only one masthead light is carried, then that light, at a height above the hull of not less than 6 metres and, if the breadth of the vessel exceeds 6 metres, then at a height above the hull not less than such breadth, so however that the light need not be placed at a greater height above the hull than 12 metres.

(ii) When two masthead lights are carried the after one shall be at least 4.5 metres vertically higher than the forward one.

(b) The vertical separation of masthead lights of power-driven vessels shall be such that in all normal conditions of trim the after light will be seen over and separate from the forward light at a distance of 1 000 metres from the stem when viewed from sea level.

(c) The masthead light of a power-driven vessel of 12 metres but less than 20 metres in length shall be placed at a height above the gunwale of not less than 2.5 metres.

(d) A power-driven vessel of less than 12 metres in length may carry the uppermost light at a height of less than 2.5 metres above the sunwale. When however a masthead light is carried in addition to side lights and a sternlight, then such masthead light shall be carried at least 1 metre higher than the sidelights.

(e) One of the two or three masthead lights prescribed for a power -driven vessel when engaged in

towing or pushing another vessel shall be placed in the same position as either the forward masthead light or the after masthead light; provided that, if carried on the aftermast, the lowest after masthead light shall be at least 4.5 metres vertically higher than the forward masthead light.

(f) (i) The masthead light or lights prescribed in Rule 23(a) shall be so placed as to be above and clear of all other lights and obstructions except as described in sub-paragraph (ii).

(ii) When it is impracticable to carry the all-round lights prescribed by Rule 27(b)(i) or Rule 28 below the masthead lights, they may be carried above the after masthead light(s) or vertically in between the forward masthead light(s) and after masthead light(s) provided that in the latter case the requirement of section 3 (c) of this Annex shall be complied with.

(g) The sidelights of a power-driven vessel shall be placed at a height above the hull not greater than three quarters or that of the forward masthead light. They shall not be so low as to be interfered with by deck lights.

(h) The sidelights, if in a combined lantern and carried on a power-driven vessel of less than 20 metres in length, shall be placed not less than 1 metre below the masthead light;

(i) When the Rules prescribed two or three lights to be carried in a vertical line, they shall be spaced as follows:—

(i) On a vessel of 20 metres in length or more such lights shall be spaced not less than 2 metres apart, and the lowest of these lights shall, except where a towing light is required be placed at a height of not less than 4 metres above the hull.

(ii) On a vessel of less than 20 metres, in length as such lights shall be placed not less than 1 metre apart and the lowest of these lights shall, except where a towing light is required be placed at a height of not less than 2 metres above the hull.

(iii) When three lights are carried they shall be equally spaced.

(j) The lower of the two all-round lights prescribed for a vessel when engaged in fishing shall be at a height above the sidelights not less than twice the distance between the two vertical lights.

(k) The forward anchor light, prescribed in Rule 30(a)(i), when two are carried, shall not be less than 4.5 metres above the after one. On a vessel of 50 metres or more in length this forward anchor light shall be placed at a height of not less 6 metres above the hull.

3. Horizontal positioning and spacing of lights.

(a) When two masthead lights are prescribed for a power-driven vessel the horizontal distance between them shall not be less than one half of the length of the vessel but need not be more than 100 metres. The forward light shall be placed not more than one quarter of the length of the vessel from the stem.

(b) On a power-driven vessel of 20 metres or more in length the side-lights shall not be placed in front of the forward masthead lights. They shall be placed at or near the side of the vessel.

(c) When the lights prescribed in Rule 27(b)(i) or Rule 28 are placed vertically between the forward masthead light(s) and the after masthead light(s) these all-round lights shall be placed at a horizontal distance of not less than 2 metres from the fore and after centreline of the vessel in the athwartship direction.

4. Details of location of direction-indicating lights for fishing vessels, dredges and vessels engaged in under water operations.

(a) The light indicating the direction of the out-lying gear from vessel engaged in fishing as prescribed in Rule 26 (c) (ii) shall be placed at a horizontal distance of not less than 2 metres and not more than 6 metres away from the two all-round red and blue lights. This light shall be placed not higher than the all-round white light prescribed in Rule 26 (c) (i) and not lower than the sidelights.

(b) The lights and shapes on a vessel engaged in dredging or underwater operations to indicate the obstructed side and/or the side on which it is safe to pass as prescribed in Rule 27(d) (i) and (ii), shall be placed at the maximum practical horizontal distance, but in no case less than 2 metres, from the lights or shapes prescribed in Rule 27 (b) (i) and (ii). In no case shall the upper of these lights or shapes be at a greater height than the lower of the three lights or shapes prescribed in Rule 27 (b) (i) and (ii).

5. Screen for sidelights.—The side lights of vessels of 20 metres or more in length shall be fitted with inboard screens painted matt black, and meeting the requirements of section 9 of this Annexure. On ves-

sels of less than 20 metres in length the sidelights, if necessary to meet the requirements of Section 9 of this annex, shall be fitted with inboard matt black screens with a combined lantern, using a single vertical filament and a very narrow division between the green and red sections, external screens need not be fitted.

6. Shapes.

(a) Shapes shall be black and of the following sizes :

- (i) a ball shall have a diameter of not less than 0.6 metre;
- (ii) A cone shall have a base diameter of not less than 0.6 metre and a height equal to its diameter;
- (iii) a cylinder shall have a diameter of at least 0.6 metre and a height of twice its diameter;
- (iv) a diamond shape shall consist of two cones as defined in (iii) above having a common base.

(b) The vertical distance between shapes shall be atleast 1.5 metre.

(c) In a vessel of less than 20 metres in length shapes of lesser dimensions but commensurate with the size of the vessel may be used and the distance apart may correspondingly reduced.

7. Colour specification of lights.—The chromaticity of all navigation light shall conform to the following standards which lie within the boundaries of the areas of the diagram specified for each colour by the International Commission on Illumination (CIE).

The boundaries of the area for each colour are given by indicating the corner co-ordinates, which are as follow :—

(i) White						
x	.	0.525	0.525	0.452	0.310	0.310
y	.	0.382	0.440	0.440	0.348	0.283
(ii) Green						
x	.	0.028	0.099	0.300	0.213	
y	.	0.385	0.723	0.511	0.356	
(iii) Red						
x	.	0.680	0.660	0.735	0.721	
y	.	0.320	0.320	0.265	0.259	
(iv) Yellow						
x	.	0.612	0.618	0.575	0.575	
y	.	0.382	0.382	0.425	0.406	

. Intensity of Lights :

(a) The minimum luminous intensity of lights shall be calculated by using the formula :

$$I = 3.43 \times .0^6 \times T^2$$

where I is luminous intensity in candela as under service conditions.

T is threshold factor 2×10^{-7} lux.

D is range of visibility (luminous range) of the light in nautical miles,

K is atmospheric transmissivity.

For prescribed lights the value of K shall be 0.8, corresponding to a metrological visibility of approximately 13 nautical miles.

(b) A selection of figures derived from the formula is given in the following table :

Range of visibility (luminous range) of light in nautical miles	Luminous intensity of light in candela for K=0.8
D	I
1	0.9
2	4.3
3	12
4	27
5	52
6	94

NOTE.—The maximum luminous intensity of navigation lights should be limited to avoid undue glare. This shall not be achieved by a variable control of the luminous intensity.

9. Horizontal Sectors :

(a) (i) In the forward direction, sidelights as fitted on the vessel shall show the minimum required intensities. The intensities must decrease to reach practical cut-off between 1 degree and 3 degrees outside the prescribed sectors.

(ii) For sternlights and masthead lights and at 22.5 degrees abaft the beam for sidelights, the minimum required intensities shall be maintained over the arc of the horizon up to 5 degree within the limits of the sectors prescribed in Rule 21. From 5 degree within the prescribed sectors the intensities may decrease by 50 per cent up to the prescribed limits; it shall decrease steadily to reach practical cut-off at not more than 5 degrees outside the prescribed sectors.

(b) All-round lights shall be so located as not to be obscured by masts, topmasts or structures within angular sectors of more than 6 degrees except anchor lights prescribed in Rule 30 which need not be placed at impracticable height above the hull.

10. Vertical Sectors

(a) The vertical sectors of electric lights as fitted, with the exception of lights on sailing vessels shall ensure that :

(i) at least the required minimum intensity is maintained at all angles from 5 degrees above to 5 degrees below the horizontal.

(ii) at least 60 per cent of the required minimum intensity is maintained from 7.5 degrees above to 7.5 degrees below the horizontal.

(b) In the case of sailing vessels the vertical sectors of electric lights as fitted shall ensure that :

(i) at least the required minimum intensity is maintained at all angles from 5 degrees above to 5 degrees below the horizontal.

(ii) at least 50 per cent of the required minimum intensity is maintained from 25 degrees above to 25 degrees below the horizontal.

(c) In the case of lights other than electric these specifications shall be met as closely as possible.

11. Intensity of non-electric lights.—Non-electric lights shall so far as practicable comply with the minimum intensities, as specified in the Table given in Section 8 of this annexure.

12. Manoeuvring light.—Notwithstanding the provisions of paragraph 2(f) of this Annexure the manoeuvring light described in Rule 34(b) shall be placed in the same fore and aft vertical plane as the masthead light or lights and, where practicable, at a minimum height of 2 metres vertically above the forward masthead light, provided that it shall be carried not less than 2 metres vertically above or below the after masthead light. On a vessel where only one masthead light is carried where it can best be seen, not less than 2 metres vertically apart from the masthead light.

13. Approval.—The construction of lights and shapes the installation of lights on board the vessel shall be to the satisfaction of the appropriate authority of the State whose flag the vessel is entitled to fly.

ANNEX II

Additional Signals for fishing for fishing Vessels fishing in close Proximity

1. General.—The lights mentioned herein shall, if exhibited in pursuance of Rule 26(d), be placed where they can best be seen. They shall be at least 0.9 metre apart but at a lower level than lights prescribed in Rule 26(b)(i) and (c)(i). The lights shall be visible all round the horizon at a distance off at least 1 mile but at a lesser distance than the lights prescribed by these Rules for fishing vessels.

2. Signals for Trawlers.—(a) Vessels when engaged in trawling, whether using demersal or pelagic gear, may exhibit:

- (i) When shooting their nets : two white lights in a vertical line;
 - (ii) when hauling their nets: one white light over one red light in a vertical line;
 - (iii) when the net has come fast upon an obstruction : two red lights in a vertical line.

(b) Each vessel engaged in pair trawling may exhibit:

- (i) by night, a searchlight directed forward and in the direction of other vessel of the pair;
 - (ii) when shooting or hauling their nets or when their nets have come fast upon an obstruction, the light prescribed in 2(a) above.

3. Signals for purse seiners.—Vessels engaged in fishing with purse seine gear may exhibit two yellow lights in a vertical line. These lights shall flash alternately every second and with equal light and occultation duration. These lights may be exhibited only when the vessel is hampered by its fishing gear.

ANNEX III

Technical Details of Sound Signals Appliances

1. Whistles.—(a) Frequencies and range of audibility—The fundamental frequency of the signal shall lie within the range 70-700 Hz.

Length of vessel in metres	'3:1' active band level at 1 metre in dB referred to 2×10^{-5} N ² /m	Audiometry range in nautical miles
200 or more	143	2
75 but less than 200	138	1.5
20 but less than 75	130	1
Less than 20	120	0.5

The range of audibility in the table above is for information and is approximately the range at which a whistle may be heard on its forward axis with 80 per cent probability in conditions of still air on board a vessel having average background noise level at the listening posts (taken to be 68 dB in the octave band centred on 250 Hz and 63 dB in the octave band centred on 500 Hz).

In practice the range at which a whistle may be heard is extremely variable and depends critically on weather condition, the values given can be regarded as typical but under conditions of strong wind or high ambient noise level at the listening post the range may be much reduced.

(d) Directional properties.—The sound pressure level of a directional whistle shall be not more than 4 dB below the prescribed sound pressure level on

The range of audibility of the signal from a whistle shall be determined by those frequencies, which may include the fundamental and/or one or more higher frequencies, while within the range 180-700 Hz (+ 1 per cent) and which provide the sound pressure levels specified in paragraph 1(c) below.

(b) Limits of fundamental frequencies—To ensure a wide variety of whistle characteristics, the fundamental frequency of whistle shall between the following limits :

- (i) 70-200 Hz, for a vessel 200 metres or more in length
 - (ii) 13-350 Hz, for a vessel 75 metres but less than 200 metres in length
 - (iii) 250-700 Hz, for vessel less than 75 metres in length

(c) Sound Signal intensity and range of audibility.—A whistle fitted in a vessel shall provide, in the direction of maximum intensity of the whistle and at a distance of 1 metre from it, a sound pressure level in at least one 1/3rd octave band within the range of frequencies 180-700 Hz (+ 1 per cent) of not less than the appropriate figure given in the table below.

the axis at any direction in the horizontal plane within (+ 45 degrees of the axis). The sound pressure level at any other direction in the horizontal plane shall be not more than 10 dB below the prescribed sound pressure level on the axis, so that the range in any direction will be atleast half the range on the forward axis. The sound pressure level shall be measured in that 1/3rd octave band which determines the audibility range.

(e) Positioning of whistles.—When a directional whistle is to be used as the only whistle on a vessel, it shall be installed with its maximum intensity directed straight ahead.

A whistle shall be placed as high as practicable on a vessel, in order to reduce interception of the emitted sound by obstructions and also to minimise hearing damage risk to personnel. The sound pressure level of the vessel's own signal at listening posts shall not

exceed 110 dB(A) and so far as practicable should not exceed 100 dB(A).

(f) Fitting of more than one whistle.— If whistles are fitted at a distance apart of more than 100 metres, it should be so arranged that they are not sounder simultaneously.

(g) Combined whistle systems.—If due to the presence of obstructions the sound field of a single whistle or of one of the whistles referred to in paragraph 1(f) above is likely to have a zone of greatly reduced signal level, it is recommended that a combined whistle system be fitted so as to overcome this reduction. For the purposes of the Rules a combined whistle system is to be regarded as single whistle. The whistles of a combined system shall be located at a distance apart of not more than 100 metres and arranged to be sounded simultaneously. The frequency of any one whistle shall differ from those of others by at least 10 Hz.

2. Bell or Gong

(a) Intensity of Signal—A bell or gong, or other device having similar sound characteristics shall produce a sound pressure level of not less than 110 dB at a distance of 1 metre, from it.

(b) Construction—Bells and gongs shall be made of corrosion-resistant material and designed to give a clear tone. The diameter of the mouth of the bell shall be not less than 300 mm for vessels of 20 metres or more in length, and shall be not less than 200 mm for vessels of 12 metres or more but of less than 20 metres in length. Where practicable, a power-driven bell striker is recommended to ensure constant force but manual operation shall be possible. The mass of the striker shall not be less than 3 per cent of the mass of the bell.

3. Approval

The construction of sound signal appliances, their performance and their installation on board the vessel shall be to the satisfaction of the appropriate authority of the state whose flag the vessel is entitled to fly.

ANNEX IV

Ditress Signals

1. The following signals, used or exhibited either together or separately indicate distress and need of assistance :

- (a) a gun or other explosive signal fired at intervals of about a minute;
- (b) a continuous sounding with any fog-signal-lining apparatus;
- (c) rockets or shells, throwing red stars fired one at a time at short intervals.

- (d) a signal made by radiotelegraphy or by any other signalling method consisting of the group(SOS) in the Morse Code;
- (e) a signal sent by radiotelephony consisting of the spoken word "May-day".
- (f) the International Code signal of distress indicated by N.C.
- (g) a signal consisting of a square flag having above or below it a ball of anything resembling a ball;
- (h) flames on the vessel (as from a burning tar barrel, oil barrel, etc.).
- (i) a rocket parachute flare or a hand flare showing a red light;
- (j) a smoke signal giving off orange-coloured smoke;
- (k) slowly and repeatedly raising and lowering arms outstretched to each side;
- (l) the radiotelegraph alarm signal;
- (m) the radiotelephony alarm signal;
- (n) signals transmitted by emergency position-indicating radio beacons.

2. The use of exhibition of any of the foregoing signals except for the purpose of indicating distress and need of assistance and the use of other signals which may be confused with any of the above signals is prohibited.

3. Attention is drawn to the relevant sections of the International Code of Signals, the Merchant Ship Search and Rescue Manual and the following signals :—

- (a) a piece of orange-coloured canvas with either a black square and circle or other appropriate symbol (for identification from the air);
- (b) a dye marker.

NOTE : The principal rules were published in the Gazette of India, Part, 3, Section II, Sub-section (i) dated 5-7-1975 at pages 1820—1845 vide Government notification, Ministry of Shipping and Transport, No. GSR 820 dated 25-6-1975 and was subsequently amended by,—

- (i) Government notification No. GSR 1317 dated 24-10-1978, published in the Gazette of India, Part II, Section 3, Sub-section (i) dated 4-11-1978 at page 2533.

F.No. SW|5-MSR(8)|85-MA]

SUDARSHAN SYNGHAL, Under Secy.

